भूमिका

१४०० वर्ष पूर्व संसार में इस्लाम का कहीं कोई नामोनिशान इतिहास में नहीं मिलता। ईसाइयत का इतिहास भी २००० वर्ष का ही है। जैन धर्म २५०० वर्ष का है। परन्तु वैदिक धर्म का इतिहास इतना पुराना है कि खोज करने वाले इतिहासकारों ने एक स्वर से यह कहा कि वेद से पुरानी कोई पुस्तक नहीं।

मर्यादा पुरुषोत्तम श्री भगवान राम जिनको आज ९॥ लाख वर्ष हो गये हैं उनके बारे में महर्षि बाल्मीकि ने लिखा है कि वे :

आर्यः सर्व समश्चैव सर्वदा प्रियदर्शिनः, वे आर्य जाति के महापुरुष थे।

और उनके धर्म के सम्बन्ध में लिखा है—

वेद वेदांग तत्त्वज्ञः धनुर्वेदे च तिष्ठतः

वेद व वेद के सभी अंगों को गहराई से जानने वाले थे।

इतनी पुरानी महान आर्य जाति का महाभारत काल में भाई-भाई की लड़ाई में ऐसा सर्वनाश हुआ कि विद्वानों के नष्ट हो जाने से वेद विद्या ही लोप हो गई। उनके स्थान पर गत हजारों वर्ष मिथ्या मत-मतान्तरों का बोलबाला रहा। देश मत-मतान्तरों के मायाजाल में फंसकर विदेशी आक्रान्ताओं का शिकार बनकर दासता की बेड़ियों में जकड़ गया। जिस देश को कभी पारसमणि कहा जाता था जिससे छूकर ही विदेशी मालामाल हो जाते थे वह दुख दरिद्रता का ऐसा कुरूप बन गया कि भारतवासियों को अपनी रोटी रोजी के लिए देश छोड़कर विदेशों में शरण लेनी पड़ी।

ऐसी ही दशा सुरीनाम वासी भारतीय मूल के लोगों की है।

वर्तमान देश सुरीनाम

दक्षिण अमरीका स्थित अटलान्टिक महासागर के तट पर तीन गयाना नामक देश विख्यात है। उत्तर-पूर्व में फ्रेंच गयाना, मध्य में डच गयाना (सुरीनाम) व पश्चिम में ब्रिटिश गयाना स्थित है।

सुरीनाम देश का आकार पूर्व से पश्चिम तक ४२५ किलोमीटर, उत्तर से दक्षिण तक ४४५ किलोमीटर है जिसका कुल क्षेत्र १४२८२२ वर्ग किलोमीटर बनता है। यह राष्ट्र डच साम्राज्य होलैण्ड का उपनिवेश था। जो २५ नवम्बर १९७५ को स्वतंत्र हो गया है। इसका क्षेत्रफल होलैण्ड देश से ५ गुना बड़ा है। किन्तु आबादी केवल ४ लाख से कुछ अधिक है। सुदूर दक्षिण भाग के घने जंगलों में रेड इण्डियन्स और दासता के समय में भागे काली जाति के लोग जो "बुस निग्रोना" नाम से विख्यात हैं और वहीं बसते हैं। भारतीयों की संख्या यद्यपि नीग्रो लोगों से अधिक है परन्तु नीग्रो, जाकी, चायनीज, डूगी, पहाड़ी, डच यूरोपियन आदि जातियों के लोगों के सम्मिलित समूह से वोट देने के समय कम पड़ जाती है। सुरीनाम के पीछे (दक्षिण में) विशाल देश ब्राजील फैला हुआ है जिसका क्षेत्रफल ८,५११,९६५ वर्ग किलोमीटर है जो भारत से करीब तिगुना है और जनसंख्या कुल ८१२७१००० है।

सुरीनाम में भारतीयों का आगमन

सुरीनाम में भारतीयों का आगमन डच सरकारी घोषणा ता० ३ मई १८७३ सनद ८ के अनुसार सर्वप्रथम लाला रुखजहाज द्वारा ५ जून १८७३ को हुआ। सिलसिलेवार तारीख २४ मई १९१३ तक २४ जहाजों के द्वारा कुल ३४३०४ भारतीय सुरीनाम देश में आए। पुनाली सारबसी शर्ति अनुसार इन्हें ५ वर्ष के कन्टैक्ट समाप्त कर पुनः भारत लौटने की इजाजत थी। फिर भी कन्ट्रैक्ट के बाद जिन्होंने सुरीनाम रहना प्रसन्द किया उन्हें १०० रुपया नगद और खेती करने के लिए २ हेक्टेयर भूमि पुरस्कार दिया जाता

था। कन्ट्रेक्ट समाप्त होने पर कितने ही भारतीय ब्रिटिश व फ्रेंच गयाना से आकर सुरीनाम में ही बस गये। जिनकी कुल जनसंख्या २३८४ रही थी। इस देश में कान्ट्रेक्ट समाप्ति के पश्चात् भारत लौटने वालों की जनसंख्या कुल ११,५१२ है। भारत से विदेश जाने वालों के ३ मुख्य कारण थे—(१) गरीबी से हताहत हो कहीं मजदूरी की खोज में निकलना (२) अपनी जाति या समुदाय में तिरस्कृत होने पर देश छोड़कर भाग निकलना (३) किसी यात्रा में कन्ट्रेक्ट हथकण्डों (अरकाठी) से ठगे जाना।

यह प्रसिद्ध है कि भारत से विदेश जाने वाले लोग मजदूर श्रेणी के थे, बहुत कम शिक्षित सुरीनाम में पहुँचे। विशेषतया ब्राह्मणों व क्षत्रियों को कन्ट्रेक्ट में नहीं लिया जाता था। अतएव रोटी कमा कर पेट पालने वाले लोग ही अधिकतर सुरीनाम आए थे। पढ़े-लिखे उच्च कुल के लोग यदि यहां आवें तो अपनी जाति छिपाकर कान्ट्रेक्ट में अपना नाम लिखवाते थे। ऐसे लोगों में अधिकतर वही थे जिनके ऊपर भारत में ही आर्य समाज की छाप लग चुकी थी। किन्तु भारत से तो यह अपनी-अपनी जाति (वर्ण) छुपाकर चले। यहां पहुँचकर पैसा कमाने के चक्कर में अपना धर्म ही छुपा लिए। इने गिने जो पढ़े लोग थे वे अंधों के देश में कानाराजा के दृष्टान्त के अनुसार अपने को ब्राह्मण घोषित कर चेलापन्थी के पुजारी बन बैठे।

कन्ट्रेक्ट के बाद जो लोग 'आजादी की शर्तों' के अनुसार स्टेटों में काम करने लगे थे उन लोगों की आर्थिक दशा उन लोगों की अपेक्षा बेहतर थी जो कन्ट्रेक्ट के बाद स्वतन्त्र रूप से खेती बाड़ी के काम में लग गए थे। देश में सर्वत्र गरीबी थी। जाति कुप्रथा का जोर था। एकेश्वर पूजा के स्थान पर देवी-देवताओं के अतिरिक्त भूत प्रेत एवं ताजिया आदि की पूजा होने लगी थी। सबसे बड़ा देवता यहां काली की पूजा में जहां खसी (बकरे) का बलिदान व भरों की पूजा में भेड़ा का बलिदान होता था। वहां एक नए देवता (डिहबाबा) को सूअर व भूसीपापा को मुर्गा की बलि चढ़ाई जाती थी। गरीबी के कारण बाल-बच्चों का पालन-पोषण और धार्मिक आडम्बरों

के कारण प्रतिक्रिया स्वरूप आत्मिक शान्ति के लिए जन समाज में धार्मिक व सामाजिक क्रान्ति उत्पन्न हो रही थी।

इन्हीं कारणों से लोग धड़ाधड़ अपने बच्चों को ईसाइयों की गोद में सौंप रहे थे। सन् १९३० की रिपोर्ट से पता चलता है कि सुरीनाम में ३६००० भारतीयों के अन्दर ईसाइयों की संख्या १४००० हो गई थी। आर्य समाज को इसकी पीड़ा हुई उसने पूरे लगन से वैदिक धर्म का प्रचार व धर्म रक्षा का अभियान चलाया। परिणामस्वरूप आर्य समाज के ५० वर्ष तक प्रचार के कारण भारतीयों की १४२००० जनसंख्या में से केवल २००० ईसाई रह गए। यह है महर्षि दयानन्द के महान मिशन का चमत्कार।

सुरीनाम में वैदिक धर्म का प्रचार करने में श्रीराम प्रसाद जी, जयजय-राम ने बहुत लगन से सेवा की है। उनकी लगन का एक उज्जवल स्वरूप है जो अपनी पुस्तक में उन्होंने आर्य संस्कृति के प्रति अपनी निष्ठा व आस्था को भाषा का रूप दिया है। सुरीनाम से इतनी दूर भारतवर्ष में आकर हजारों रुपए खर्च करके अपने हृदयोद्गार को जनता तक पहुँचाने के लिए दो मूल्यवान प्रकाशन किए हैं। एक पुस्तक 'आर्य संस्कृति' जिसमें वैदिक मान्यताओं का समावेश है। समाज में फैले रूढ़िवाद, पाखण्डवाद के स्थान पर सत्य सनातन वैदिक धर्म के सिद्धान्तों, मान्यताओं के आधार पर सब अपना जीवन बनाएंगे तो उनका जीवन सफल व सुन्दर बनेगा।

आज खाओ पीओ मौज करो के झूठे भोगवाद में डूबा हुआ योरोप स्वयं भी विनाश के पथ पर अग्रसर है। अपितु सारे संसार को एक निर्जीव तत्व मानकर उसके विनाश के लिए नित नए घोर घातक हथियारों के निर्माण में लगा है। मानव की सत्ता उसकी आत्म शक्ति व आत्म विकास में लगे उसके स्थान पर मानव मानव का शत्रु बनकर परस्पर घोर घातक हथियारों से एक-दूसरे को नष्ट कर डाले ऐसा असांस्कृतिक नग्न नृत्य योरोप में संस्कृति के नाम पर हो रहा है।

वैदिक ऋषियों ने मानव के इस विनाश की इस दशा को ठीक पहचान कर ही 'जिओ और जीने दो' का आध्यात्मिक संदेश दिया था। वेद भगवान

ने संसार के मनुष्य मात्र को परस्पर सगे भाई की तरह प्रेम सद्भाव व सहयोग के आधार पर जीने का संदेश दिया है। वेद कहता है—

संगच्छध्वं सं वदध्वं संवो मनांसि जानताम।
देवा भागं यथा पूर्वे संजानाना उपासते॥

हम प्रभु की सभी सन्तानें परस्पर एक साथ चलें ऐसा मान एक भावों की समान बोली बोलें। सब परस्पर मिलकर प्रभु के सच्चे पुत्र बनकर उसी की उपासना करें।

मां भ्राता भ्रातरं द्विक्षन

कोई भाई एक दूसरे से वैर विरोध न करें।

वेद के इस नित्य उपदेश के न मानने के कारण संसार में सर्वत्र वैर-विरोध के ज्वालामुखी उबल रहे हैं। छोटे-बड़े का भेद बनाकर कमजोर को नष्ट करने के उपाय हो रहे हैं। आखिर बलवान सम्राट भी तो नष्ट हो ही गए।

यह चमन यूं ही रहेगा और हजारों बुलबुलें।
अपनी-अपनी बोलियां सब बोलकर उड़ जाएंगी॥

जयजयराम जी ने उत्तम भजन संगीत के द्वारा वैदिक धर्म के प्रचार का जो प्रयास किया है वह अत्यन्त सराहनीय व सुखदायक है।

हम पाठकों से श्री जयजय राम जी के द्वारा प्रस्तुत पुस्तक को मनोयोग पूर्वक पढ़ने की प्रार्थना करते हैं व इन विचारों की जन-जन तक पहुँचाने की आशा करते हैं।

१६, शिवकुंज,
मजास रोड, बम्बई-६०

(आचार्य) शिवराज शास्त्री एम०ए०
मौलवी फ़ाज़िल

॥ ओ३म् ॥

महर्षि गाथा एक विहंगम दृष्टि (१)

अंधकार की काली परतें, बिछी हुई इस धरणी पर,
ज्योति किरण ! आओ जीवन की राह संवारे हम सब पर।
भय आशंकाओं के हटकर मानवता का सुस्वर है,
विभीषिका को रौंदे जा रहा अभय सत्य मार्ग पर है।
ओ दिन ! ओ रजनी, ओ गत आगत के प्रहरी आगे तक,
इन दो पांवो को बढ़ने दो सुमन ध्येय की मंजिल तक।
सन्तान, धरा, वैभव व सुधा के सब बन्धन खुल जाते हैं,
संसार मोह पर लात मार कितने गौतम बन जाते हैं।
स्वर तो भटक रहा था कब से साज न मिलने पाए थे,
विद्रोही उद्‌बोधन को बस अंदाज न मिलने पाए थे।
कितनों के भीतर ज्वार प्रलय करने को उद्यत खड़े यहां,
कितने जन क्रूर फिरंगी से अवसर पाकर भिड़ पड़े यहां।
कितनों ने सुख सम्पत्ति सभी मां के चरणों पर वारी थी,
इतिहास देखता था यह सन् ५७ की तैयारी थी।
अन्याय कहीं कैसा भी हो देता है जन्म बगावत को,
शोषण कब रोक सका है आते परिवर्तन अभ्यागत को।
जब जनता का उद्वेलित स्वर संघर्ष मार्ग पर चलता है,
तब वर्षों से पद्‌दलित देश का सोया भाग्य बदलता है।
बलिदान आज की जनता के कल का निर्माण किया करते,
अन्तर की पीड़ा के घन कल को जीवन दान दिया करते।
ऊंचे नीचे भारी पत्थर, हर पत्थर का अपना उत्तर,
जीवन की धार बहा करती कुछ लेकर फिर अपना देकर।

कुछ मिल जाया करता चलकर कुछ प्रायः छिन जाया करता,
ऐसे ही जीवन पथ पर राही का दिन ढ़ल जाया करता।

प्रार्थना भजन (२)

तुम हो प्रभु चांद मैं हूँ चकोरा,
तुम हो कमल फूल मैं रस का भौंरा।
ज्योति तुम्हारी का मैं हूँ पतंगा,
आनन्द धन तुम हो मैं बन का मोरा।
जैसे है चुम्बक को लोहे सी प्रीति,
आकर्षण करे मोहि लगा तार तोरा।
पानी बिना जैसे हो मीन व्याकुल,
वैसे ही तड़पाय तुम्हरा बिछोरा।
इक बूंद जल का मैं प्यासा हूँ चातक,
अमृत की करो वर्षा हरो ताप मोरा।

भजन (३)

अब सौंप दिया इस जीवन का, सब भार तुम्हारे हाथों में,
है जीत तुम्हारे हाथों में, है हार तुम्हारे हाथों में।
मेरा निश्चय है एक यही, इक बार तुम्हें पा जाऊं मैं,
अर्पण कर दूं इस जीवन का, सब प्यार तुम्हारे हाथों में।
या तो मैं जग से दूर रहूँ और जग में रहूँ तो ऐसे रहूँ,
इस पार तुम्हारे हाथों में, उस पार तुम्हारे हाथों में।
यदि मनुष्य ही मुझे जन्म मिले, तब प्रभु चरणन का पुजारी बनूं,
मुझ पूजक की इक-इक रग का, हो तार तुम्हारे हाथों में।
जब-जब संसार का बन्दी बन, दरबार में तेरे आऊं मैं,
हो मेरे पापों का निर्णय, जगदीश तुम्हारे हाथों में।

मुझ में तुझ में है भेद यही, मैं नर हूँ तुम नारायण हो,
मैं हूँ संसार के हाथों में, ससार तुम्हारे हाथों में।

गीत (४)

भगवान मेरी नया उस पार लगा देना,
अब तक तो निभाया है आगे भी निभा देना।

दल बल के साथ माया घेरे जो मुझ को आकर,
तो देखते न रहना, झट आके बचा लेना।

सम्भव है झंझटों में मैं तुझ को भूल जाऊं,
पर नाथ कहीं तुम भी, मुझ को न भुला देना।

तुम ओम् मैं पुजारी, तुम इष्ट मैं उपासक,
यह बात सच है यदि तो सच करके दिखा देना।

गीत (५)

मैया बरस-बरस बारी,
बूंद-बूंद पर तेरे जाऊं, बार-बार बलिहारी।

नदी सरोवर सागर बरसे, लागी झारियां भारी,
मोरे आंगना क्यों नहीं बरसे, मैं क्या बात बिगारी।

तू बरसे मैं जी भर न्हाऊं, दोनों भुजा पसारी,
नयन मूंदकर मैं गुन गाऊं, अपना आप बिसारी।

जय-जय राम अति बिनय करत है, सुन लो बिनय हमारी,
अपना जानकर मुझे उबारो, आया हूँ शरण तिहारी।

गीत (६)

उड़ जा रे पखेरू दिन तो रह गया थोरा,
उड़ते-उड़ते जन्म गंवाया जहां शहर तहां डेरा।

चुन-चुन कंकर महल बनाया मूर्ख कहे घर मेरा,
ना घर तेरा ना घर मेरा चिड़ियां रैन बसेरा।
'ईश्वर चन्द' यह कहता फिरता, जंगल में हो गया डेरा,

दादरा (७)

बीती जाती उमरिया हमारी रे,
क्यों न लेते खबरिया हमारी रे ॥१॥
भटकत-भटकत इत-उत फिरता,
नहीं पाया शरण तुम्हारी रे ॥२॥
मन्दिर ढूंढा मसजिद खोजा,
कहीं पाया न दर्श तुम्हारी रे ॥३॥
काशी देखा मथुरा ध्याया,
प्रभु तुमको कहीं नहीं पाया रे ॥४॥
जय-जय राम अति बिनय करत है,
मुझे ले लो शरण तुम्हारी रे ॥५॥

रेखता (८)

स्वामिन दयालुता से दुःख दर्द सर्व हरिए,
उर में विवेक भरिए चित को प्रसन्न करिए ॥१॥
पशु तुल्य काम क्रीड़ा गो ग्राम में न उपजे,
परिपक्व शुक्र होवें बिनती सुकान धरिए ॥२॥
कर्णाधता बिदूरै वैदिक सुविज्ञता से,
आनन्द की सुचरचा मस्तिष्क मांहि भरिए ॥३॥
जय-जय राम विनय करता सुनलो विनय हमारी,
वैदिक धर्म जगत् में घर-घर प्रसार करिए ॥४॥

गजल (९)

ईश्वर दया की दृष्टि अब टुक इधर भी कर दो,
रहमत से अपनी दामन इस दीन का भी भर दो ॥१॥
आज्ञा का तेरे पालन निशि दिन करो मैं स्वामी,
भिक्षुक हूँ नाथ तेरा भक्ति का मुझ को बर दो ॥२॥
माता बहन व कन्या समझूं पराई नारी,
समभाव सबको देखूं ऐसी मुझे नजर दो ॥३॥
पुरुषार्थ करके जो कुछ मिल जाय नाथ सामां,
उसमें ही ए दयामय ! संतोष और सबर दो ॥४॥

गजल (१०)

ईश्वर हमारे तन में सच्चा प्रकाश भर दो,
मेहनत करने में जग में धन से मकान भर दो।
बेकार है वह धन जो पर स्वार्थ में न व्यय हो,
दुखिया अनाथ पालन करने को नाथ बल दो।
कर्मानुसार यदि मैं मानव शरीर पाऊं,
हे ईश ! जन्म मेरा सत् आर्यों के घर दो।
संकट हजार पड़ने पर भी धर्म को न छोड़ूं,
निर्भय मैं हो के बल से पूरित प्रभु जिगर दो।
कर जोड़ ईश तुम से हे नाथ अब विनय है,
अपना ही ध्यान मुझको निज शाम और सुबह दो।

गजल (११)

हे न्यायकारी ! हे निर्विकारी हे जातवारी तुम्हीं हमारे।
न और कोई हितू हमारा, हमें बचाओ हैं हम तुम्हारे ॥१॥
बगौर दुनियां को हमने देखा खुद मतलब के हैं यार सारे।
किससे कहें अब दिल दर्द अपना जान के शत्रू हैं, जो थे प्यारे ॥२॥

जमाना भी कुछ निराली सजधज बदल रहा है, अजीब रंग ढंग ।
जो थे कभी नूर में चूर भरपूर, भटकते फिरते हैं मारे मारे ॥३॥
जो थे समझते कि हम हैं सारे, मुल्कों के मालिक गरीब परवर ।
वली पहलवां लाखों हुनर वर नहीं पता वह किधर सिधारे ॥४॥
इस दुनियां फानी में हमने देखा, हजारों बनते बिगड़ते लाखों ।
फिर किसकी शादी गमीं मनावें किसे बनावें आंखों के तारे ॥५॥
लगी है अब तो तुम्हीं से आशा, जय जय राम को बनालो दासा ।
जैसा है खोटा खरा या खासा तुमने तो लाखों पापी तारे ॥६॥

भजन (१२)

कर कृपा पार उतारियो मेरी टूटी सी किश्ती है
तुम अविनाशी अजर अमर हो, सारे भूमण्डल के घर हो
सबके भीतर और बाहर हो, कारीगर बड़े भारी,
रची सकल अजब सृष्टि है ॥१॥ मेरी
सबका न्याय करो जगराई, बिन मन्त्री और बिना सिपाही,
करो फैसला कलम न स्याही, ऐसे न्यायकारी हो,
नहीं गलती पड़ सकती है ॥२॥ मेरी
अब तक दुख भोगे हैं भारी, बहुत हुई दुर्दशा हमारी,
अब आए हम शरण तुम्हारी तुम ही हितकारी हो,
तारो तो तर सकती है ॥३॥ मेरी
बिना कृपा करुणा निधि तेरी, कुछ नहीं पार बसाती मेरी,
जय जयराम हम सबकी बेडी काट सभी दुख टारियो,
जो हृदय कुमति बसती है ॥४॥ मेरी

गजल (१३)

मेरी एक है विनय तुमसे प्रभु तुम दीन हितकारी,
हरो तुम मेरे हृदय की अविद्या रूप अंधियारी ॥१॥

प्रकाशित ज्ञान अपने का हृदय में कीजिए सूरज,
मिले कल्याण का रस्ता बने हम सुख के अधिकारी ॥२॥
गया है छूट वह मारग हमारे पूर्व पुरुषों का,
बिना उसके हमारी हो गई अब दुर्दशा भारी ॥३॥
हमारा धर्म वैदिक था उपासक आपके हम थे,
हुए अब पंथ नाना ही और नाना इष्ट औतारी ॥४॥
मचा अंधेर अब ऐसा हवा बदली जमाने की,
तुम्हीं पर आशा है भारी तुम्हीं पितु बन्धु महतारी ॥५॥
तुम्हीं हो धर्म के पालक अधर्मी दुष्ट कुल घातक,
समझ निज अपने बालक को बचाओ बेग बलधारी ॥६॥

भजन (१४)

दयानिधि सब दुख दूर करो।
हमको सुख भोगन को मारन कितहू न सूझि परो,
लौकिक हाय हाय में हारे अब तक ध्यान धरो।
जोरि बटोरि पाप की पूंजी करम कपाल भरो,
सारी आयु पाप में बीती अब तुमरी शरण परो।
राम समान भीरु भक्तन के हे प्रभु शोक हरो।

कव्वाली (१५)

प्रभु कर मदद तू मेरी मुश्किल हटाने वाले,
जबसे नजर कड़ी है, आफत में जां पड़ी है,
अब तो बचाओ बन्धु, सबके कहाने वाले।
सुत मित्र नारि भाई कोई नहीं सहाई,
यहां के यहां रहेंगे, रिश्ता बढ़ाने वाले।

आलम में हमने देखा अच्छी तरह से परखा,
सब ऊपरी हैं अपने बातें बनाने वाले ।
जब चलना मेरा होगा, सब कुछ यहीं रहेगा,
तुम ही सहारा मेरा दुख से बचाने वाले ।
यह विनय है हमारी कर शुद्ध चाल मन की,
तुझको ही जान जावें मुक्ति दिलाने वाले ।

भजन (१६)

भवसागर से नैया दीजो पार उतार,
मुझे काम क्रोध ने घेरा, मंझधार पड़ा है बेड़ा ।
अब किस बिधि उतरूं पार । भवसागर……
मेरी नाव वहां जाती है, जहां कोई नहीं साथी है,
सब मतलब के हैं यार । भवसागर……
सुत मात पिता और भ्राता, अन्त में कोई नजर नहीं आता,
सभी छूटा परिवार । भवसागर……
मेरा लोभ मोह बिसराओ, अपनी भक्ति सिखलाओ,
करूं भव सागर पार । भवसागर……

भजन (१७)

मेरी सुनियो नाथ पुकार, सबके हितू कहाने वाले,
यहां थी पहले धर्म बहार, अब दी सभी ने हिम्मत हार,
होगा तुमसे ईस सुधार, सबको धीर बंधाने वाले । सबके…
पहले यहां पर थे ब्रह्मचारी, उनकी जगह बने व्यभिचारी,
अविद्या लगती उनको प्यारी, ऐसे पाप कमाने वाले । सबके…
है फिर तुमसे ही ईस पुकार नैया करो हमारी पार,
यह तो डोले हैं मंझधार, तुम हो पार लगाने वाले । सबके…

कहता रामप्रसाद है देर, मेरी दशा लीजिए हेर,
नेक न होवे इसमें देर, तुमने बड़े बड़े काज संभाले। सबके…

गजल (१८)

तेरे शरण में आनके सर को झुकाते हैं,
ईश्वर तुम्हीं को जानके हम आनन्द पाते हैं।

दुनियां में तुझसे ज्यादा कोई दीखता नहीं,
सबसे हटाके दिल को तुझसे लगाते हैं।

मुद्दत हुई है भटकते हमें खाक छानते,
दे ज्ञान हमको तुझ पै हम विश्वास लाते हैं।

अफसोस का मुकाम है, हम सोचते नहीं,
इकदेशी तुझको मानके काबा में जाते हैं।

मूरखपने से लोभ के फन्दे में आनके,
वैदिक धर्म को छोड़ के हम दुख उठाते हैं।

गजल (१९)

तेरी शरण में आए हैं हमको उबारिए,
अपनी दया की दृष्टि कर हमको संभालिए।
अन्तःकरण को ज्ञान से भरपूर कीजिए,
सब भान्ति से अज्ञानता मेरी छुड़ाइए।
लौ आप में लगी रहे भागा फिरे न मन,
इसके लिए विवेक का पहरा बिठाइए।
दुनियां के जमघटों से अलग करके रात दिन,
अपना ही प्रेम मन में हमारे बढ़ाइए।
अनुकूल सारी जिन्दगी अपनी बनाएं हम,
सन्देश वेद ज्ञान का हमको सुनाइए।

भिक्षा मैं मांगता हूँ तेरे दर पै प्रेम से,
जीवन मरण के रोग से हमको बचाइए।

गजल (२०)

दया करो हम सब पर स्वामी, तुम्हारा हमने लिया सहारा,
तुम्हीं हो कर्ता तुम्हीं हो भर्ता तुम्ही हो रक्षक हे सर्वधारा।
हे सबके घट घट में बसने वाले न कोई तुमसे अलग है किंचित,
न होगा वह जन कभी भी सुखी, कि जिसने तुमको नहीं पुकारा।
हे सच्चिदानन्द, सर्वसुखमय, ये सारी खलकत रचाई तुमने,
हमारी हालत सुधारो स्वामी जगत के भ्रम में तुम्हें बिसारा।
हे न्यायकारी ! हे ज्ञान सिन्धो, पिता हमारे। हे प्राण दाता,
विचारा अच्छी तरह से हमने न कोई बेटा न कोई दारा।
तुम्हारी सत्ता बड़ी अनौखी क्या हमसे जन उसका पार पावें
ऋषि ऋषीश्वर, मुनी मुनीश्वर बताते पाके समाधि द्वारा।
अजब निराला है काम तेरा, सभी जगत को बसाने वाले,
सभी को छोड़ा है हमने अब तो लिया है आश्रय फकत तुम्हारा।

दादरा (२१)

दीनानाथ तुम्हारा सहारा हमें, यहां दीखे न कोई हमारा हमें।
अपने स्वारथ के हैं यहां साथी सभी नहीं दीखे कोई दिलदारा हमें ॥
पड़ी नैया भंवर में पुरानी बड़ी कीजै स्वामी किनारे पै पारा हमें।
पतित उधारक कहाते जगतमें तुम्हींफिर किसलिए स्वामी बिसारा हमें ॥
कामक्रोध मोहलोभ ने हमला किया सब दिशा से इन्होंने बिगारा हमें।
और कोई नहीं है सहारा जयराम बस तुम्हारा ही दीखे सहारा हमें ॥

भजन (२२)

है बिनती तुम से हमारी प्रभु जी बारम्बार,
हम आशा करें तुम्हारी, तुम ही सब के हितकारी।

करो पार ये नाव हमारी, जगदाधार धार धार ॥
है आपका हमको सहारा और कोई नहीं हमारा,
क्या मित्र बन्धु सुतदारा करे जो पार पार पार।
ऐसी आपकी है प्रभुताई, पर्वत से कर देते राई,
वेदों ने प्रशंसा गाई सर्वाधार धार धार।
प्रभु तुम ही दुःख मिटाओ, मेरा लोभ मोह बिसराओ,
सुखदायक भक्ति सिखाओ, होजाऊं पार पार पार।

भजन (२३)

कुछ नहीं है पास हमारे, प्रभु जो क्या भेंट करूं,
खाली हाथ यहां पर आया, नहीं साथ अपने कुछ लाया।
कोई वस्तु नहीं यहां मेरी जिसे मैं भेंट करूं ॥
मूरख तुमको भोग लगावे, जल देवे कपड़े पहनावें।
जब कि यहां कुछ भी नहीं मेरा, मेरा कहते हुए डरूं ॥
जीवन मूल पदार्थ जो हैं, दिए हुए आप ही के हैं।
अपना बतावे मूर्ख वे हैं, मैं तो आपकी शरण परूं ॥
सूरज चान्द और सब तारे, आपके सारे तकें सहारे।
यदि ओ३म् नाम नहीं गाए, दुख ही दुख भरूं ॥

भजन (२४)

प्रभु करके दया अब बेग, सुरीनाम को पार लगाओ,
जनता पड़ी हुई मंजधार, पता नहीं आर होय या पार।
मच रहा भारी हाहाकार, प्रभु जी तुम ही इसे बचाओ ॥
छाया हुआ अंधेर महान, सकते नहीं कुछ भी पहचान।
गाफिल पड़े हुए सरदार, इनको जल्दी ज्ञान कराओ ॥
खोजे मिलता नहीं है माल, हो गया हाल बहुत बेहाल।
प्रभु जी लीजे शीघ्र संभाल, नहीं अब तनिक भी देर लगाओ ॥

नाव में हो रहे जो भी सवार, कर रहे आपस में तकरार।
सभी में फैले गलत बिचार, सब में मेल मिलाप कराओ॥
फंसकर खुदगर्जी में पापी, अभी भी कर रहे आपाधापी।
मूरख समझें नहीं कदापि, चाहे कितना ही समझाओ॥
तुम बिन हे प्रभु दीनानाथ, देगा कौन बिपत में साथ।
स्वामी बढ़ा दया का हाथ, देश की बिगड़ी दशा बनाओ॥

भजन (२५)

निरन्तर तेरा ध्यान धरूं,

भक्ति बड़े तब चरण सुखावह तिरस्कृत नाहि करूं॥
भव सागर की धार अगम है धीरज धार तरूं॥
जीवन नैया पाप में डूबी कैसे पार करूं।
राम कहे नहीं फिरूं भटकता, उर आनन्द भरूं॥

कव्वाली (२६)

रक्षा करो हमारी तुम ही वेद ज्ञान वाले,
जग में भी रमते हो ऐ बेनिशान वाले।
पल पल में तुमको ध्याऊं ऐ न्यायकारी,
ज्योति तुम्हारी चमके हो चन्द्रभान वाले।
कष्टों से तुम छुड़ादो हम दास हैं तुम्हारे,
सिखलादो अपनी भक्ति आनन्द देने वाले।
मेरे तुम्हीं हो सर्वस ए दीन बन्धु स्वामी,
अपनी शरण में ले लो मुक्ति दिलाने वाले।

गजल (२७)

बिन दर्शन तेरे स्वामी नहीं दिल को करारी है;
कमल ज्यों नीर बिन सूखे, पपीहा ध्वनि पुकारी है।
विन जल मीन नहीं जीवे, वही गति अब हमारी है॥१॥

नहीं है और की इच्छा तेरा ही नाम कारी है,
फिरा नजरें इधर को तू यही बिनती हमारी है ॥२॥
भला कैसे हो हां सारी मिटा श्रुत बोध की विद्या,
बढ़ा दो फिर से इसको अब, यही इक आश धारी है ॥३॥
न पाऊ जब तलक दर्शन मुझे जीना भी भारी है,
मुझे दर्शन दिखा दो क्यों, वृथा सुध बुध बिसारी है ॥४॥
नहीं हम मान के भूखे, नहीं दौलत प्यारी है,
फकत चाहें शरण तुम्हरी यही इच्छा हमारी है ॥५॥

गजल (२७)

तुम ही रक्षक हो महाराज, दीनानाथ कहाने वाले
हम तो पापो में ही लीन, कुछ नहीं रहा ठिकाने दीन,
बन गये बुद्धि विवेक विहीन, विष रस पान कराने वाले ।१॥
तुमही सबके हो आधार जाना मैंने इसे विचार,
फूटी न्याय विवेचन धार, हो तुम न्याय चुकाने वाले ।२॥
देते दुष्ट जनों को दण्ड, करके अपना न्याय प्रचण्ड,
तुममें रौद्र प्रभाव प्रचण्ड, क्या गुण गावें गाने वाले ।३॥
हम सब तुम्हरी हैं सन्तान अपना चाह रहे कल्याण
हम सब त्यागें भ्रम अज्ञान, हों सब तुम्हरे ध्याने वाले ।४॥

भजन (२८)

रहा मैं डूब सागर में बचा लोगे तो क्या होगा,
तुम अपना जानकर हमको निहारोगे तो क्या होगा।
हो पुत्र कैसा ही कमजोर पिता को दया लाजिम है,
दशा हमरी जो बिगड़ी है संभालोगे तो क्या होगा।
अधम कैसे ही हम सब है, पतित पावन हो तुम स्वामी,
हमारे दोष की गणना बिसारोगे तो क्या होगा।

मुझे मदहोश आलम ने प्रभु कुछ दिन से घेरा है,
इन्हें अब ज्ञान खंजर से जो मारोगे तो क्या होगा।

शरण ली आपकी अब तो, झुकाए सर खड़ा हूं मैं,
निगह इक रहम की करके, जो तारोगे तो क्या होगा।

तुम्हें तज और को पूजें नवाएं सर जो नीचों को,
ये मूरखता की दुनियां से निकलोगे तो क्या होगा।

चाहे अब कुछ कहो हमको शरण तेरी में आया हूं,
अधम या दास मूरख कह पुकारोगे तो क्या होगा।

भजअ (२६)

विनय करूं कर जोड़कर सुनिए नाथ पुकार
इस असार संसार से लीजे मोहि उबार

करूणानिधि बेगि उबारो, नाथ मेरी बिनती तुम्हीं से है। टेक—
बनकर अधम अधिक व्यभिचारी, विषय भोग में उमर गुजारी,
शरणागत हो दया तुम्हारी, चाह नहीं और किसी से है।
काम क्रोध ने बहुत सताया, लोभी बन इत उसको ध्याया,
तव सुमरण नहीं चित्त लगाया हुआ यह दोष हमीं से है।
मन मूरख चहुँ दिश ध्यावे, सुत धन दारा में भटकावे,
आखिर को धक्के ही खावे, पाता दुख गलती से है।
हम सब तुम्हरी हैं संतान, अपना चाह रहे कल्याण,
हम सब ही हैं दास तुम्हारे, इससे आश तुम्हीं से है।

भजन (३०)

जा दिन अपनावेंगे आप,
वेद पढ़ायेंगे हम सबको ज्ञानी गुरू मां बाप,
स्वामी छूट जाएंगे छिन में घोर कुकर्म कलाप।

पौरुष पावक में पजरेंगे आलम के अभिशाप,
बैर बिसार अधर्म गहेंगे, करके मेल मिलाप।
व्रत वारिधि में डूब मरेंगे जन्म जन्म के पाप,
फिर व्याकुल कबहूं न करेंगे, मोह शोक सन्ताप।
भूखें दुनिया में न बसेंगे, दम्भ अविद्या दाप,
परम शुद्ध वे पद गायेंगे, जिनमें ओ३म हैं आप।

भजन (३१)

अब तो दया करो करतार,
विषय भोग में मैंने फंसकर तुमको दिया बिसार,
अपने हित की बात न जानी कैसे हो उद्धार।
ज्ञान ध्यान सिखलाकर मुझको कीजे भवनिधि पार,
जीवन नैया इत उत डोले पार करो भरतार।
आकर दुनियां में मैं तुझको भूल गया करतार,
बार-बार जय राम पुकारे अनहित भया विचार।

भजन (३२)

बिनती है मेरी आप से श्री ओम्कार
दुनिया के वासी नर-नारी रहे न अब तो नैक सुखारी,
श्रेष्ठ आर्य से भए अनारी तजकर वेद प्रचार।
द्वेष भाव आपस में छाया सारा मेल मिलाप मिटाया,
अब तक भी डर बेचन आया रहे कुमति ही धार।
दुनियां फिर से लासानी हो सच्चे शूरवीर दानी हों,
कोई न इनमें अज्ञानी हों, कुल कठोर महि भार।
सबकी कुमति विनाश कीजे, विद्या भर घट-घट में दीजै,
सभी जनों को शरण में लीजे, हे प्रभु जगदाधार।

भजन (३३)

प्रभु के तारनहार, तुझे नमस्ते मेरा । टेक

प्रभु आदि अन्त नहीं तेरा, सब तुझमें करें बसेरा ।
अमित तेरा बिस्तार । तुझे नमस्ते······

तेरा ही गुण ज्ञानी गाते, गाते गाते वो थक जाते ।
स्वामी है तू अपरम्पार । तुझे नमस्ते......

सृष्टि का तू ही कारण है, तेरा ही ऊपर धारण है ।
सब सुखों का ही भण्डार । तुझे नमस्ते······

आप ही कर्मों का फल देता, न्यायानुसार सुध भी है लेता ।
कोई सके न तुम्हें विचार । तुझे नमस्ते······

नहिं देह कभी तू धरता, तू ही अमर कभी नहीं मरता ।
कहत श्रुति शास्त्र पुकार । तुझे नमस्ते······

भजन (३४)

शरणागत पाल कृपाल प्रभो हमको इक आस तुम्हारी है,
तुम्हारे सम दूसरा और कोई नहीं दीन न को हितकारी है ।
सुधि लेत सदा सब जीवन की अतिशय करुणा विस्तारी है,
प्रतिपाल करें बिन ही बदले अस कौन पिता महतारी है ।
जब नाथ दयाकरि देखत हो छुटि जात बिथा संसारी हैं,
बिसराय तुम्हें सुख चाहत जो अस कौन निदान अनारी है ।
परवाह उन्हें नहीं स्वर्गहु की जिनको तव कीरति प्यारी है,
धनि है धनि है सुखदायक जो तव प्रेम सुधा अधिकारी है ।
सब भान्ति समर्थ सहायक हो तव आश्रित बुद्धि हमारी है,
जय राम प्रभु जी तो तुम्हारे पद पंकज पै बलिहारी है ।

गजल (३४)

दयामय ज्ञान का दीपक दिलों में अब जला दीज,
सहारा छोड़कर तुम्हरा पिता जी अब तलक हमने,
बहुत ही कष्ट भोगे है दिलों में सुख बसा दोजै।
नहीं है धर्म से प्रेम न ममता जाति की अपने,
हमारे बोध की मात्रा निरन्तर ही बढ़ा दीजे।
तेरी आज्ञा नहीं समझे निरर्थक ही भटकते हैं,
सुदृश विश्वास के मन में अपना अब बसा दीजे।
यह प्याला प्रेभ रसका है तुम्हारा दास जय-जय राम,
दयाकर एक प्याला शीघ्र ही हमको पिला दीजै।

गजल (३६)

हे पिता मैं तुम्हारा क्या दास ही नहीं,
आश्रित तेरा नहीं हूँ कि तेरी प्रजा नहीं।
मेरे तो नाथ कोई तुम्हारे बिना नहीं,
माता नहीं है बन्धु और पिता नहीं।
करुणा करोगे क्या मेरे आंसू ही देखकर,
जी का भी मेरे दुःख तो तुमसे छिपा नहीं।
जानेगा कोई क्या कि है दासों का तुमको पक्ष,
दुष्टों का सर्वनाश जो तूने किया नहीं।
तुम भी शरण न दोगे तो मैं जाऊंगा कहां,
अच्छा हूं या बुरा हूँ किसी और का नहीं।

गजल (३७)

दया के सिंधु हमारी व्यथा सुनो तो सही
पुकार पुत्र की अपने पिता सुनो तो सही।

जो अपने लोगों के ऊपर दया नहीं करते,
कहेगा आपको संसार क्या सुनो तो सही।

दुखो में ग्रस्त हूं तुमको पुकारता हूँ मैं,
अपने भक्तों पै दया करके दिखाओ तो सही।

जो बुरा मुझसे हुआ आप बचाओ जल्दी,
किसी की और हैं हम क्या प्रजा सुनो तो सही।

जो भूल बैठे हो अपने ही शिष्य को ऐसा,
तो होगी उसकी भला क्या दशा सुनो तो सही।

उपदेश-ज्ञान-वैराग्य

भजन (३८)

बिनती कर लो दीनदयाल की जो है सबका हितकारी,
नहीं भरोसा है पलभर का काम न आवे कोई घर का।
सुमिरन कर लो जगदीश्वर का छोड़ो उल्टी चाल को,
यह है प्रार्थना हमारी।१।।

जग में कोई नहीं तुम्हारा जीते जी का धन्धा सारा,
किसके मात-पिता सुतदारा, पूर्ति नहीं होगी ख्याल की।
क्यों नाहक उमर गुजारी।२।।

काम क्रोध मद लोभ बिसारो, दसो इन्द्रियां अपनी मारो,
एक सत्य को मन में धारो, सब फांसी ममता जाल की।
तोड़े जंजीर तुम्हारी।३।।

बाग बगीचा किला तबेला, दुखदायक तजो सभी झमेला,
आखिर जावे जीव अकेला बेला आवे जब काल की।
पड़ी रह जाय दौलत सारी।४।।

दादरा (३६)

भूला डोले जगत में प्राणी

करत फिरत है मेरी मेरी, सुत कुटुम्ब सम्पति रजधानी,
न्याय अन्याय कुछ नहीं जाने करत फिरत अपनी मनमानी।
कर्त्तव्य अपना नहीं पहचाने निशदिन काम करत शैतानी,
समझाए भी समझत नाही, होगी पीछे बहुत ही हानि।
हटत नहीं जयराम बदी से, तेरी होगी जग में हानि॥

ठुमरी (४०)

ओंकार में जो अहंकार तजो पछताओगे नहीं जो भई सो भई,
अविचार अनीति जो मन से मद मस्त हो मत यौवन से,
उपकार करो तन मन धन से इतनी वय बीत गई सो गई।
पर का दुख देख सहाय करो बिगरै नहीं धर्म उपाय करो,
करनी शुभ अवसर पाय करो अब लौं तुम नींद लई सो लई।
कर ध्यान सनातन चाल चलो, अवरुप हुताशन में न जलो,
अब तो अपने दोऊ हाथ मलो तुमने विष बोल बोई सो बोई।

ठुमरी (४१)

अबही से सुधार करो अपना नहीं बिगरो का कुछ सोच करो,
अति दीन कहां प्रभु शरण गहो, मत जीवन में अघक्रोध भरो।
वेदों के नित उपदेश सुनो ममता मन की मय दोष हरो,
बिगड़ी बन जाए अभी से तुम इस जीवन को नहीं नष्ट करो।
सत संगत में जा जा करके मन को अपने काबू में रखो,
बिनती जयराम करें सबसे सिर पै अपने मत दोष धरो।

गजल (४२)

उसको जो देखना हो योगी हो ध्यान वाले,
आनन्द लेना चाहो तो बनो ब्रह्मज्ञान वाले।

क्या शोक है फिर इसका गर हम नहीं रहेंगे,
जब रह न पाया यां पर विक्रम सी शान वाले।
वेदों की फिर हकीकत मालूम हो उन्हें कुछ,
वेदार्थ करना सीखें इंग्लिश जबान वाले।
हों ओम् के उपासक अमरीका और योरूप,
जापान चीन वाले हिन्दोस्तान वाले।
उन लोगों को सुधारें अब चल के आर्य नेता,
जो चल रहे हैं उल्टे उन्हें ठीक से संभालें।

गजल (४३)

ओम् को छोड़कर तूने लगन किस से लगाई है,
हुआ नादान क्यों ऐसा समझ क्या बेच खाई है।
जो है सब सृष्टि का पालक भुलाया उसको है तुमने,
बुतों को पूजकर तूने नफा क्या उसमें पाई है।
जो है हर वस्तु में व्यापक ओम् निराकार अविनाशी,
तू गढ़कर अपने हाथों से जा मन्दिर में बिठाई है।
नहीं वह जन्म मृत्यु के कभी बंधन में आता है,
बताकर जन्म क्यों उसको वृथा तोहमत लगाई है।
राम और कृष्ण सत् पुरुषों की क्यों निन्दा करे भाई,
बनाकर स्वांग क्यों तूने हंसी उनकी कराई है।

पूर्वी (४४)

आनन्द भूला चाहि जो भूलन पैंग बिचार बढ़ाय के,
दया धर्म के खम्बे, गाड़े, ज्ञान की डोर लगाय के।
सत्य की पटली पै बैठ के भाई, ध्यान की पैंग लगाय के,
हो एकाग्र चित्त शुद्ध भूले, बनिता वृत्ति बिठाय के।

दृढ़ आसन पै बैठ धैर्य से, अवलम्बन छूट न जाय रे,
भूमि गिरन के शोक और भय से निश्चय मन छुट जाय रे।
सारी दुनियां यहि बिधि झूलत ऊर्ध्व पैगं तब जाय रे,
सुन्दर अमन नगर की गलियां तब कही देखन पायरे।

कव्वाली (४५)

छोड़ो न तुम धर्म को चाहे जान तन से निकले,
सच्चा वचन ही तेरे शीरीं दहन से निकले।
पाया है उच्च जीवन इसकी विचारों कीमत,
ऐसा प्रयत्न करिए अविचार मन से निकले।
संगति सुजन जनों की करनी सदा भली है,
जिससे कुवासना मन अन्तःकरण से निकले।
उपकार ऐसा करिए संसार कीर्ति गावे,
स्वार्थान्धता अलहदा मन से वचन से निकले।
रहना नहीं किसी को इस दुनियां में सदा ही,
कर्त्तव्य की सभी त्रुटि हम सब जनों से निकले।

भजन (४६)

भाई तू इस लोक में, चाहे निज कल्याण, दोहा
तो भज उसको प्रेम से जो तुझमें रममाण।
प्राणी जप ईश्वर का नाम, तू किस गफलत में सोवे,
चलना है रहना न यहां पर, क्यों सोया होकर तू बे डर,
काल का घौंसा बाजे शीश पर, मत होना बदनाम,
करले जो कुछ भी होवे ॥१॥
विषय भोग में समय गंवाया, नहीं ध्यान ईश्वर का लाया,
काल ने जिसदम आन दबाया, कोई न आवे काम,
करमल मलकर फिर रोवे।

करके पाप तू द्रव्य कमावे, कुटुम्ब सभी खुश होंकर खावे,
सजा अकेला तू ही पावे, अकल हुई क्या खाम,
अनमोल समय को खोवे ।
आलस तज भक्ति कर प्राणी, क्यों तू अपना जन्म बिगारे,
भाइओ ! मन को क्यों नहीं मारो, करके प्राणायाम,
आनन्द तुम्हें कुछ होवे ।

भजन (४७)

सदा धर्म करते रहो जब लग घट में प्राण, दोहा
धर्म शास्त्र में दस लिखा इसके खास निशान
धृति, क्षमा, दमोऽस्तेयं शोच मिन्द्रिय निग्रह,
धी विद्या सत्यम क्रोधो दशकं धर्म लक्षणम् ।
दस चिन्ह धर्म के भाई महाराज मनु बतलाते टेक
पहले तुम धीरज को धारो, दूजे सबके बचन सम्भारों,
तीजे मन अपने को मारो, यही उपदेश सुनाते ।
चौथे तज चोरी का पेशा मिटे सकल नर तेरे क्लेशा,
रहो पांचवे शुद्ध हमेशा सब ऋषि मुनी यों गाते ।
छटे इन्द्रियां वश में करना सप्तम चित विचार में धरना,
अष्टम विद्या मन में भरना जो तुम मनुष्य कहलाते ।
नवें सत्य को धारण कीजे, दशवें क्रोध नाश कर दीजे,
प्रभु को सुमरि सदा तुम लीजे क्या वृथा जन्म गंवाते ।

गजल (४८)

सब कहो महाशय, ओम्-ओम्-ओम्
सब नामों से है यह प्यारा, आदि काल से श्रुति उचारा,
मूल मंत्र महिमा है अपारा इस धारण करो सारी कौम-कौम-कौम ।
अकार उकार मकार मिलाकर विश्व रूप विराट दिखाकर,

हो प्रसन्न नाना विधि गाकर सहित हृदय और रोम-रोम-रोम ।
काम क्रोध मदलोभ को हरता, शोक मोह सब हलके करता,
शुद्ध प्रकाश हिए में भरता जैसे गगन में रवि सोम-सोम-सोम ।
आवागमन की मिट जाए फांसी मुक्ति देत ईश्वर अविनाशी,
राम कहे हौलेन्ड निवासी भक्ति का उर में जोम-जोम-जोम ।

गजल (४९)

प्रभु को भजले प्राणी हो जाए पार-पार-पार
कुछ खबर नहीं इक पलकी, तुम जोड़ी माया छलकी,
सुन मूढ़ काल के दल की पड़ेंगी मार-मार-मार ।
नहीं मात-पिता कोई साथी तिय बन्धु और सुतनाती,
सब मतलब के हैं संगाती, धर्म ही सार-सार-सार ।
प्रभु अजर अमर अबिनाशी, वो है सब घट-घट के वासी,
काटेंगे दुःखों की फांसी, दया उर धार-धार-धार ।
जो करे भजन ईश्वर का, हो शुद्ध वृति अन्दर का,
हो प्यारा दुनिया भर का तरे जब बार-बार-बार ।

भजन (५०)

नृत्य लखोये अनौखाही भाई
शामियाना नभ भूमि चान्दनी दश ओर दिशा समुदाई,
तारागण के झाड़ सजे हैं, त्रिगुण की बेल सजाई ।
सूर्य चन्द्र दो मशाल जली हैं, पंखे की वायु चलाई,
मेघ गुलाब पाश बरसत जल, गर्ज के स्वरन मिलाई ।
कर्म जीव बंध नाच रहे है आवागमन दिखराई,
इन्द्र नाम का वह जगदीश्वर जोरहा नृत्य कराई ।
फल दे अने शुभ अशुभ उनके न्याय युक्त जगराई,
भाइयो त्यागो मिथ्या नाच को, आवागमन को लेऊ छुड़ाई ।

भजन (५१)

सुमिरन बिन गोते खावोगे,
क्या लेकर तुम आए जग में क्या लेकर फिर जावोगे। सुमिरन
मुट्ठी बांधे आए जगत में, हाथ पसारे जाओगे। सुमिरन
यह तन है कागज की पुड़िया, बूंद पड़े गलि जावोगे।
पापों में सब उमर गंवाई, जम के डण्डे खावोगे।
उलटे काम करे नितवासर, सीधे नर्क में जाओगे।
कहत सुधारक सुनो श्रोतागण ओम् बिना पछताओगे।

भजन (५२)

ओम् जपन क्यों छोड़ दिया तूने
काम न छोड़ा क्रोध न छोड़ा, सत्य वचन क्यों छोड़ दिया तूने।
झूटे जग में दिल ललचा कर असल वतन क्यों छोड़ दिया तूने।
दौलत को तो खूब संभाला, लाल रतन क्यों छोड़ दिया तूने।
जिस सुमिरन से अति सुख पावे वो सुमिरन क्यों छोड़ दिया तूने।
कौड़ी कौड़ी माया जोड़ी प्रभु सुमिरन क्यों छोड़ दिया तूने।
मन्दिर महल अटारी बंगले सब पकड़े ओम् को छोड़ दिया तूने।

भजन (५३)

जो प्रभु से प्रीत लगाता है वह मोक्ष धाम को जाता है।
वह भयन काल से खाता है निज मन में धीर बंधाता है,
वह शान्तिशील बन जाता है उसका सब दुःख मिट जाता है।
दुनियां में सबको भाता है वह महापुरुष कहलाता है,
नहीं कोई उसे थकाता है। नित निर्भय हरिगुन गाता है।
जो कर्ता को बिसराता है सांसारिक मौज मनाता है,
धार्मिक उत्साह घटाता है फिर अन्त समय पछताता है।

भाइयो ! वह ही इक दाता है सबका पालन करवाता है,
वही कारण करन विधाता है, पापों से हमें बचाता है।
जय-जय कहे प्यारे बंधुवरो वह दुःखों से छुड़वाता है,
वह सबका ही है मात-पिता यह वेद हमे सिखलाता है।

गजल (५४)

हम तालिब है उस नूर के जो नजर नही आता है। टेक
सब नूरों को बनाया जिसने, अपना नूर छिपाया जिसने,
अब तक भी न दिखाया जिसने, बैठ रहे हम घूर के,
ढूंढ़े से नहीं पाते है।

लाखो सर को पटक कर मर गए, नूर न देखा भटक कर मर गए।
कोई धोखे में अटक कर मर गए, जैसे हाल मंसूर के
चढ़ दार पै इतराता है।

नकाब जालिम पड़ा ही देखा, जब देखा तब अडा ही देखा,
घोर नरक में पड़ा ही देखा चक्कर काटे दूर के,
कितनों को वही भाता है।

भजन (५५)

भजन तू ओम् का करले, न खाली छोड़ इस मन को
मन खाली ऐसा बुरा जैसे मर्द बेकार
या तो बनेगा चोर यह या बन जावे बीमार,
लगे पापों के चिंतन को।

जब पावे मन को खाली तब दे इसको यह कार
स्वास-स्वास पर यह रहे शुद्ध अक्षर ओंकार
रखो दृढ़ता से इस प्रण को।

झूट पाप दुर्बोधता मत आने दो पास
यह तीनों ही करत हैं, धर्म कर्म को नाश
घटाते हैं ये ही धन को ।
पढ़ले विद्या प्रेम की प्रगट होएगा ज्ञान,
दर्शन होंगे ब्रह्म के करें तेरा कल्याण,
प्यारो करो इस साधन को ।

भजन (५६)

तुम भूले जगत् पिता को कैसा छाय रहा अज्ञान
अब तक तुम गफलत में सोए जीवन के प्रिय वासर खोए,
भारी बीज पाप के बोए हुए मतिमन्द महान ।
काया रहित ईश को जानो मत उसको साकार बखानो,
तुम इस सत्य कथन को मानों, तजो पूजन पाषाण ।
एक जगह जो इसे बतावे वह क्या भेद उमर भर जाने,
प्रभु घट घट में विभु कहाते, दया सागर भगवान ।
दरिया बहुत दूर तक जावे कैसे लौटे बीच समावे,
सभी भाई सारे सुख पावें धरो ईश्वर का ध्यान ।

भजन (५७)

तन भजन करन को दीना, नर छोड़ झूट तूफान को । टेक
सत्य कहे नहीं सत्य सुनाता, झूठी साक्षी में क्या पाता,
नित अभ्यास भोजन को करता, दधि तज मदिरा पान को,
धिक्कार जगत् में जीना ।
वेदों का न करे उच्चारण लगा पुरानों में सर मारन,
होगा क्यों भव निधि उद्धारण भर उर में अभिमान को,
बनना चाहे परबींना ।

आखें जती सती लखने को, सन्तों के दर्शन करने को,
आप लगे रंडी तकने को बस खोबैठे ईमान के,
ऐसा क्या अधर्म कीना।
चरण दिए सत पै चलने को दौलत दीनों के पालन को,
उल्टे पीटें कंगालन को, हाथ दिए है दान करन को
मत खेल जुआ मति हीना।
कान दिये प्रभु भजन सुनन को बुरे बचन सुने मत जाकर,
जय-जय राम कहें चेत में आकर धर ईश्वर के ध्यान को,
सत धर्म चाहिए चीना।

भजन (५८)

उस ओम को तन मन से, कभी न भूलो भाई,
आदि जगत् में सकल विश्व की, रचना कैसी कीन्हीं,
बालक और वृद्ध नहीं कीन्हा युवा अवस्था दीनी।
पुनि मैथुनि सृष्टि होने का नियम किया निरधार,
गर्भवास में रक्षा करके, किया अधिक उपकार।
अग्नि और आदित्य अङ्गिरा वायु ऋषि के हार,
ऋग् यजु साम अथर्व संहिता प्रगट करी है चार।
एक पिता की जितनी सन्तति सबका सम अधिकार,
इसी नियम को धारण करके वेद का करो विचार।
ईश्वर रचे पदार्थ जैसे सबके लिए समान,
ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र को तैसे ही वेद विधान।
सूर्य चन्द्रमा अग्नि वायु जल जिनसे निश दिन काम,
परम पिता की कृपा दृष्टि से दिए सभी बेदाम।
भाइओ ऐसे मनुष्य जन्म में प्रभु से चित लगाओ,
आवागमन के दुःख से छूटो नहीं पीछे पछतावो।

गजल (५९)

प्रभु के प्रेम जल में क्यों नहीं अपने को तू धोता,
विषय और भोग में फंसकर न कर बर्बाद जीवन को,
दमन कर चित्त की वृत्ति लगा ले भोग में गोता।
नहीं संसार की वस्तु कोई भी सुख की हेतु है,
वृथा इसके लिए फिर क्यों समय अनमोल तू खोता।
कभी उसको न मिल सकता है, फल सुख शान्ति का हर्गिज,
धर्म के बीज को अन्त:करण में जो नहीं बोता।
धर्म ही एक ऐसा है जो होगा अन्त में साथी,
न नारी काम आऐगी न बेटा और कोई पोता।
भटकता जाबजा नाहक तू फिर सुख के लिए भाई,
तेरे हृदय के अन्दर ही बहे आनन्द का सोता।

भजन (६०)

कोई आए कोई गए कोई हो रहा तैयार।
फिर मूर्ख अपना यहां किसे बनावे यार।
बिन ईश्वर तेरा कोई नहीं सच कहूँ समझले मन में। टेक
यह क्षणभंगुर अंग बनाया कोई न साथी संग बताया,
समय तुम्हारा तंग बताया फिर भी तो बोई नहीं,
शुभ कर्म बेल इस तन में।
बहते इस दरिया के किनारे, धोले हात बुद्धि के मारे,
दुर्गंधित हैं वस्त्र तुम्हारे, दुर्गंधी धोई नहीं,
दुख मिला अखोरी पन में।
सब कुछ जान बूझकर प्यारे, अन्धे बने हुए हो सारे,
कहते कहते हम हैं हारे त्यागी बदगोई नहीं,
रही प्रीत पराए धन में।

सोया है तो अब भी जगले, ईश्वर भाव भक्ति में पगले,
बुरी कामनाओं से भगले, जो दुर्गति सुधरी नहीं,
तो मिट जाएगा क्षण में।

भजन (६१)

मन सोच समझ बन ज्ञानी, अज्ञानी क्यों होता है। टेक
जो ईश्वर सब सुख निधान है क्यों नहीं उसका धरत ध्यान है,
नर शरीर दुर्लभ महान है ऋषि मुनि रहे बखानी
क्यों सुख की नींद सोता है।
सत्य धर्म से चित्त हटाया, विषय वासना ग्रस्त बनाया,
वीर्य रत्न अनमोल गंवाया सोच लाभ और हानि
क्यों दुख का भार ढोता है।
मन विकार के तज के प्राणी निर्विकार को ले पहचानी,
चार दिना की है जिन्दगानी, रे बनकर अभिमानी
क्यों खाता यों गोता है।
भरा असत से सभी जगत् है केवल ओम् नाम इक सत है,
भाइओ क्यों नहीं ध्यान धरत हो आएगी मौत निगरानी
क्यों पाप बीज बोता है।

भजन (६२)

नहीं पर दुख को दुख जाना नहीं पर सुख को सुख माना,
नहीं तुम दीन दुखी पहचाना मिल क्यों कर आनन्द माना।

चौक

वही धर्म है मनुष्य मात्र का इसी के ऊपर चित्त लगाओ,
क्यों दुनियां में फिरो भटकते, धन देकर धक्के खावो।
मन को करो पवित्र चित्त से राग द्वेष को बिसरावो,
स्थिर हो एकांत में बैठो भजन करो शान्ति पावो,

लगन लगावो उस ईश्वर से जग से वृत्ति हटावो।
वैर भाव बिसराय परस्पर प्रीत करो सारे नर नारी,
करो सत्य व्यहार जगत् में शिक्षा देवें वेद चारी,
तजो कुपथ की बान कहालो मान हानि है इसमें भारी,
करो भक्ति निष्काम छूट जाए जन्म मरण की बीमारी,
शरण गहो तुम ओंकार की, विषयन में क्यों उमर बिगारी।

भजन (६३)

दोहा—विषय भोग संसार के हैं सुख दुख के मूल,
इनमें फंसकर ईश को मत मूरख तू भूल।
पड़ लोभ मोह के जाल में नर आयु क्यों खोता है। टेक
यह जग जान रात का सपना, किसको कहता अपना-अपना,
भूल गया ईश्वर का सपना फंसा हुआ धन माल में,
क्यों सुख की नींद सोता है।
चलै अकड़ बन छैल छबीला, अन्त समय सब हो जाए ढीला,
काम न आए कुटुम्ब कबीला, भूला जिनके ख्याल में,
कोई साथी नहीं होता है।
अब क्यों सिर धुन-धुन पछतावै रुदन करे और रोल मचावै,
कुछ नहीं तेरा पार बसावै तू चूका पहली चाल में,
क्यों खड़ा-खड़ा रोता है।
समझ सोचकर कदम उठाना, मुश्किल मानुष जीवन पाना,
कहे मुरारी जो है दाना भज हरि को हर हाल में,
क्यों पाप बीज बोता है।

भजन (६४)

तैंने ओ३म् नाम बिसारा, इस कारण बाजी हारा। टेक ॥
कामी क्रोधी पतित अभागी, बुरे कर्म में तेरी लौ लागी,
पापी हठी सत्य पथ त्यागी, कैसे हो निस्तारा।

छलिया कपटी लोभी ज्वारी, अधमपातकी और व्यभिचारी,
हिंसक चोर कुटिल खलभारी, किस विधि होय गुजारा।
दम्भी गर्वी नमकहरामी कृतघ्नी डाकू ठग नामी,
बगुला भगत वैश्यागामी धर्म सभा से न्यारा।
अपस्वार्थी लवार अधर्मी, पर निन्दक निर्लज्ज कुकर्मी,
छाई तुझे है क्या बेशर्मी मन में नहीं बिचारा।

भजन (६५)

जीना चार दिना का रे क्यों मूर्ख फिरे मस्ताना।
मन्दिर महल अटारी बंगले नकदी माल खजाना,
उस दिन क्या कर लेगा मूरख, सब हो जाए बेगाना।
कौड़ी कौड़ी माया जोड़ी, बन बैठा धनवान,
साथ न जाए फूटी कौड़ी निकल चलें जब प्राण।
अपने आप को बड़ा जानकर क्यों करता अभिमान,
तेरे जैसे लाखों चले गए तू किसका मेहमान।
राम गए और रावण चले गए बाली और हनुमान,
राव युधिष्ठर और दुर्योधन भीमसेन बलवान।
मान ले शिक्षा जयजय राम की जो चाहे कल्याण,
परमात्म भज नित्य कर्म कर दे दीनों को दान।

दादरा (६६)

कर्मों का फल पाना होगा।
क्यों न अरे तू चेत में आवे सभी ठाठ तज जाना होगा।
विषय भोग से सभी तरह बच बचा न तो दुख पाना होगा,
अन्त समय को ए मन मूरख जंगल तेरा ठिकाना होगा।
कुछ इस जग में धर्म कमा ले साथ उसे ले जाना होगा,

जैसा जैसा कर्म करेगा वैसा ही फल पाना होगा।
अब तो चेत तू मनुआ मूरख अन्त काल पछताना होगा।।

दादरा (६७)

अब तो त्याग तनिक नादानी।
घूमि घूमि चौरासी लख में बहुत खाक दुनिया की छानी,
अगणित रोग भोग बहु भोगे तहुँ तृष्णा न बुझानी।
कबहुँ श्वान बने कबहुँ शूकर कबहुँ रंक राजा और रानी,
जनमत मरत बहुत दिन बीते अभी नहीं छोड़ी समझ शैतानी।
विषय भोग में उमर गुजारी, करते डोले काम शैतानी,
अबकी बार जयराम जो चूके होगी पीछे बहुत हैरानी।

दादरा (६८)

अब नहीं सोवो जगो मेरे भाई।
आंख खोल संसार को देखो समय दशा पर नजर घुमाई,
बदल तरंग ढंग छिन छिन में देह दशा देखो चितलाई।
पहले देखो दया ईश्वर की फिर देखो अपनी कुटिलाई,
फिर कुछ शर्म करो निज मन में काहे करावत लोक हंसाई।
सब खोकर तुम अपना बैठे अब क्यों खड़े खड़े पछताई,
होश करो अब मेरे भाई नहीं तो रह जाओगे जग माहीं।

दादरा (६९)

करले सौदा समुझि सौदाई।
इस दुनिया की विकट हाट में बड़े-बड़े चातुर गए हैं ठगाई,
द्रोह दलाल दुष्ट संग लगिके, देते अवश्य गांठ कटवाई।
कुटिल काम कज्जाक कठिन है बहुतन की दिए धूलि उड़ाई,
पापी लोभ मिलाय मोहम्मद, कामिनिके संग जाल फैलाई।
है अतिरिक्त और इन्हके ही प्रबल शत्रु तेरे दुखदाई,
बचे रहो दुनिया के लोगो होइ है सौदा तभी सुखदायी।

दादरा (७०)

झूठी देखो जगत की यारी ।

अपने स्वास्थ के सब स्वामी मात पिता भगिनी सुत नारी,
मिथ्या मोह जताय कुटुम्ब के सब देते अमोलक जन्म बिमारी।
बनी बनी के सब कोई साथी बिपत्ति परै फिर को हितकारी,
या जग में अपना नहीं कोई देख लिया मैंने आंख पसारी ।
मोह फांस में फसत जीव फिर धुनि धुनि पछतात पिछारी,
अपनो धर्म बिसारि जगत में दुःख भोगत बहु भांति अनारी ।
छोड़ो प्रीति तुम सभी जगत से, भज प्रभु भव भंजन भव भारी ॥

भजन (७१)

छोड़ो झूठे सब त्यौहार जो तुम कुशल मनाना चाहो ।
सदा न रहना जग में यार, यही लो अपने मन में धार,
करो सब सच्चे ही व्यौपार जो तुम धर्म कमाना चाहो ।
है सब मतलब का परिवार जिनसे बढ़ा रहे हो प्यार,
होवे अन्त न संग की बार जिससे चित्त हटाना चाहो ।
जब हो नाव बीच मझधार, तब कौन उसे लगावे पार,
धर्म ही सच्चा खेवनहार उसको क्यों न बढ़ाना चाहो ।
जयजय राम कहे पुकार शीघ्र अपने को ले ओ संभार,
होश में आओ जल्दी यार, जो तुम कुशल मनाना चाहो ।

भजन (७२)

यह काया की रेल रेल से अजब निराली है ।
मन का इंजन बुद्धि ड्राइवर कलें नसों के बन्धन जिन पर,
रज का जल और वीर्य अग्नि मिल भाप निकाली है ।
इंद्रियों के रचके स्टेशन, अन्तःकरण का बना जंक्शन,
शम संतोष विराग ज्ञान की लैन निकाली है ।

घंटी विवेक श्वास की सीटी नाड़ी तार ध्वनि लागत नीकी,
जीव है सैकंड गार्ड वस्त्र पंखा रखवाली है।
उत्तम मध्यम आदि अधम तम मेल पसैंजर लोकल मेकिन,
टिकट कर्म के बटें धर्म की खेप लदाली है।
काम क्रोध मद लोभ उच्च के दांव घात के जो बड़े पक्के,
धर्म अर्थ अरु काम मोक्ष की लूट मचाली है।

गजल (७३)

स्टेशन जिस्म का तेरा नफस की रेल चलती है,
पकड़ सकता नहीं कोई कि जब फारम निकलती है।
नहीं आता है जब तक तार उधर से लैन क्लियर का,
करो दिल की सफाई फिर जरा फुर्सत न मिलती है।
टिकट नेकी का जिसके पास, वही अन्दर को जाता है,
मगर बेटिकट के दुनिया खड़ी ही हाथ मलती है।
बजा करती है सीटी रात दिन वहां मौत की लोगो,
बंदों के वास्ते हरदम पुलिस दर पै टहलती है।
करें नेकी अगर जायद तो पावें दर्जा भी अव्वल,
टिकट ले लो अभी कुछ देर है इंजन बदलती है।
खड़े हो जाएंगे चुपचाप फाटक पर जो गाफिल है,
वह चल दी रेल है यारो तो अब क्या पेश चलती है।

भजन (७४)

चरखा काया रूप ओ३म् ने अजब बनाया है।
गर्भ क्षेत्र में पिण्डा गढ़कर हाड़ मांस का पत्तर मढ़कर,
इन्द्रिय खूंटे लगाके कैसे तन तनसा को बढ़ाया है।
रग पुट्ठों की गढ़ अंदवाइन, बुद्धिमान बतलाए,
मन का तकला डाल मास नौ में दर्शाया है।

चित्तरूप हृद की रथ सुन्दर कर संकल्प प्रेरे पर,
कर्म रूई का तार जीव का तन बैठाया है।
शुभ और अशुभ तार कई भांति जिसमें रहे सयाने पांती,
जैसे कांते तार ही वैसा चरखा कतवाया है।
वह चर्खे हैं लाख चौरासी नियमपूर्वक मिले है जाखी,
उत्तम मनुष्य शरीर बड़ी मुश्किल से पाया है।
जब निष्काम तार बन जावे, तब कुछ दिन चर्खा छुटजावे,
इस छुटने की आशा ने तो यहां बुलाया है।

भजन (७५)

मुखड़ा क्या देखो दर्पण में, तेरे दया धर्म नहीं मन में,
जब तक फूल रही फुलवारी, बास रही फूलन में,
इक दिन ऐसा होयगा प्राणी खाक उड़ेगी तन में।
चन्दन अगर कुसुम्बी जामा सेहत गोरे तन में,
भर यौवन डूंगर का पानी उतर जाय इक छन में।
नदिया गहरी नाव पुरानी, मिट जाए इक छन में,
धर्मी घर्मी पार उतर गए पापी डूबे छन में।
कौड़ी-कौड़ी माया जोड़ी, सुरत लगी है धन में,
दश दरवाजे बन्द भए जब रह गई मन की मन में।
पगड़ी बांधत पेच संवारत तेल मलत अंगन में,
कहत कबीर सुनो भाई साधो यह क्या लडेंगे रन में।

गजल (७६)

कभी मत भूल ईश्वर को जमाना खाक सारी है,
न कोई भी रहा जीवित सभी खल्कत सिधारी है।
न हटना धर्म अपने से मुनासिब है कभी तुमको,
भजन कर हर घड़ी उसका ये ज्सिकी फूलवारी है।

सुप्रणधारी हरिश्चन्द्र ने न छोड़ा धर्म अपने को,
बिके रोहताश और रानी कि जिनका नाम जारी है।
हुए ऐसे हकीकत भी कि जिसने धर्म नहीं छोड़ा,
कतल हुआ धर्म के ऊपर उसी ने जान वारी है।
सुनो भाईओ जरा धर ध्यान करो कर्त्तव्य का पालन,
महासुख भूल जिन्दगानी वृथा ही क्यों बिगारी है।

भजन (७७)

आओ मित्रो हम तुम मिलकर कुछ तो पर उपकार करें,
बेग अविद्या मार भगावें विद्या का विस्तार करें।
दुनियांवासी त्याग उदासी हों मुतलाशी धर्म के,
आओ उनके जीवन जग का फिर भारी उद्धार करें।
रंज जुदाई बहुत उठाई तुमने अपनी भूल से,
नाना मत पंथों को तजकर फिर आपस में प्यार करें।
जिसकी बदौलत हुआ उजाला फिर से सारी दुनियां में,
दयानन्द था जगत हितैषी सब उनका सत्कार करें।

भजन (७८)

सीधे मारग पर आ जाओ बुद्धि भरमाना छोड़ दो।
अमृतरस को पियो हमेशा बिष बरसाना छोड़ दो ॥
उल्टे कामों को सब छोड़ो बुरी वासना से मुंह मोड़ो।
संध्या करो एकान्त बैठकर कूक मचाना छोड़ दो ॥
कल्पित सारे ग्रन्थों का तुम पढ़ना पढ़ाना छोड़ दो।
वेदों के प्रतिकूल मतों का मान बढ़ाना छोड़ दो।
नहीं लुटाओ मुफ्त में दौलत अब तुम मेरे भाईयो।
पाप जानकर रण्डी भड़ुवे सभी नचाना छोड़ दो ॥

यम नियमों को पालन करना, फर्ज जरूरी आपका ।
लग जाओ इस ओर संस्कृति का नाम लजाना छोड़ दो ॥

भजन (७९)

इस काल बली ने हाय एक दिन सबको खाया है ।
जरा आंखें खोलो अभिमानी, क्यों पड़ा बुद्धि पर पानी,
मत कर्म करो शैतानी, समझ मन क्यों गर्भाया है ।
चाहे राजा हो चाहे बलधारी, चाहे निर्बल हो चाहे भिखारी,
जाएंगे सारे वारी बारी बार जिस किसी का आया है ।
डाक्टर और वैद्य विचारे, लुकमान हकीम हुए हैं सारे,
अकबर से बढ़कर हारे, मौत का नुस्खा न पाया है ।
चले कालचक्र की आरी, कटी जात है आयु सारी,
तू मन में समझ अनारी, तेजसिंह ने पद गाया है ।

दोहा (८०)

चेत-चेतकर बावले, समय चलो सब जात ।
काल रह्यो मुंह तोयबाय अब कोई दम में खात ॥
टेक—अब तो सूरत संभाल काल तेरे सिर पर पहुँचा आय ।
हुए पहलवान गुणवान और धन वारे ।
सब लिए खाए रणधीर वीर बोधारे ॥
हुए यती सती योगी संन्यासी भारे ।
कोई बचे न इनसे सारे शूर संहारे ॥

चौपाई

या जग में जनमे जो भाई, सब ही लिए काल ने खाई,
बड़े बड़े योधा बलदाई, यासे काहू की नहीं बिसाई ।

शेर—बांधकर मुट्ठी तेरा दुनियां में जब आना हुआ ।
आनकर फिर मोह के फन्दे में फंस जाना हुआ ।।
धर्म संचय नहीं किया नहीं ईश गुण गाना हुआ ।
जन्म पूंजी हार खाली हाथ फिर जाना हुआ ।।
तूने जो दुनिया पाई, नहीं कीनी नेक कमाई ।
देह तैंने विषयन में लिपटाई, दिया जनम अनमोल गवाई ।
नहीं तजा कपट अभिमान अरे नादान निकल गए प्राण,
ज्ञान बिन दीन्हों जन्म गंवाय ।

भजन (८१)

जैसी अग्नि काठ के मांही, है व्यापक पर दीखत नाही ।
ऐसे ही ओ३म् व्यापक जग मांही, सर्वकाल दिशि बसत सदा ही ।।
नेक बद ऐमाल तेरे देखता सब काल है ।
याद रख हरदम उसे जो न्यायकारी दयाल है ।।
मत किसी पर जुल्म कर हरदम वह तेरे नाल है ।
जालिमों का देख तो होता बुरा क्या हाल है ।।
पाय ऐसा जन्म गर शुभ कर्म तैंने नहीं किया ।
सख्त नादानी करी जो खोय विषयों में दिया ।।
मुक्ति का डर छोड़ के क्यों दुख का रास्ता लिया ।
पेट पाला पास से तन मन दिया तो क्या दिया ।।
दोहा—चाहता सबका भला उसका भला होगा जरूर,
दिल जलाता गैरका उसका जला होगा जरूर ।

भजन (८२)

तू क्यों करता अभियान मौत आती इक पल में हैं,
श्वास आवे चाहे नहीं आवे, पता नहीं कब आ काल दबावे,

ऐसे ही जीवन जला बुल बुला जैसे डूबा जल में हैं।
रावण कंस हुए अभिमानी जिनकी गति मति गई न जानी,
फिर कैसे बचेगा कोई जब काल बगल में है।
क्या मन में सोच बैठा है फिरता ऐंठा ऐठा है,
कुछ तो होश कर नादान क्यों फित्तूर अकल में है।
यह मन के सपने सारे यू ही रह जाऐं प्यारे,
जैसा भंवरा बन्द पड़ा है। जो फूल कमल में है।
इस जीवन पर मद माता क्यों जीवन मुफ्त गंवाता,
कुछ तो शुभ कर्म कमाले पड़ा क्यों व्यर्थ अमल में है।

दादरा (८३)

इस क्षण भंगुर जीवन पर अभिमान क्यों करे,
लाखों हुए दारा सिकन्दर, बोनापार्ट से कांपा योरूप
कुछ कर विचार तू दुखका सामान क्यों करे।
महमूद तैमूर नादिर से आए, लाखों निरपराध कटवाए,
ऐसे सितम कोई इन्सान क्यों करें।
दौलत के लाखों ने तोदे लगाए, कारूं फिरऔन जैसे आखिर गिराए,
उत्तम योनि को तू वीरान क्यों करे।
रावण जैसे बड़े गर्व वारे आखिर एक दिन यहां से सिधारे,
यह धोके की बस्ती है इतता भी मान क्यों करे।
ईश्वर नियन्ता है हमारा उसका ही पकड़ तू सहारा,
आनन्द में दुखों का सामान क्यों करे।

कव्वाली (८४)

मानो कहा हमारा कुछ धर्म कमाकर जाओ।
यह मनुष्य जन्म है इसको नहीं व्यर्थ गंवाओं,

बड़े भाग मानुष मिलता सौभाग्यों से पाया ।
ऐसे कर्म करो तुम प्यारे आगे भी इसको पाओ,
जहां तलक मुमकिन हो तुम से सबकी करो भलाई ।
स्वार्थ नशा मत फूंको जीवन व्यर्थ न किसी को सताओ,
यम निमयों का पालन करके जीवन ही सुधरेगा ।
गंगा माता के समान तुम निर्मल हृदय बनाओ,
प्रभु प्यारे की उत्तम शिक्षा जो वेदों में वर्णित ।
उसकी आज्ञाओं को सारे जग भर में फैलाओ ।
बद एतकादियों में जो लोग फंस रहे हैं ।
उनको सुधार सच्चा वैदिक व्रती बनाओ ।

कव्वाली (८५)

मानो कहा हमारा, कुछ धर्म अब कमाओ,
हिन्दूपना मिटाना लाजिम है हिन्दुओं का,
कहलाना आर्य सच्चा अच्छी तरह सिखावो ।
वैदिक धर्म की अजमत, पाकी जगी को प्यारे,
शुभ कर्म करके अपने दुनियां को तुम दिखावो ।
हर्गिज भी मत डरो तुम बेजा मुखालफत से,
आगे ही आगे अपना हरदम कदम बढ़ाओ ।
उठो कमर को कसकर हिम्मत से मेरे प्यारे,
दुनिया में हर जगह पर वैदिक ध्वनि गुंजाओ ।
जय राम तुम्हरा सेवक कर जोड़ कह रहा है,
वैदिक धर्म का बीड़ा अच्छी तरह उठाओ ।

धनानि भूमौ पशवश्च गोष्टे
भार्या गृह द्वार जना: श्मशाने

देहश्चितायां परलोक मार्गे
धर्मा नुगो गच्छति जीव एक:

राग गीत (८६)

धन धरा के बीज सारा ही गढ़ा रहा जाएगा,
पशु भी बंधे रह जाऐंगे जब कूच का दिन आएगा।
नारी घर के द्वार तक ही साथ देगी लोक में,
मित्र दल मरघट से आगे साथ नहीं दिखलाएगा।
देह भी तेरी चिता के बीच जल भुन जाएगी,
यह दृश्य आगे का मुझे क्या चेत में नहीं लाएगा।
एक बस ध्रुव धर्म ही सच्चा सखा है अन्त का,
जोड़ इसमें प्रेम अपना नित नए सुखपाएगा।
ध्यान में मेरा कहा जो काम में न लाएगा,
तो जहा के बीच भारी ठोकरें तू खाएगा।

भजन (८७)

है धर्म चीज वह प्यारे जिससे इन्सान कहाते—टेक
इक धर्म बिना संसार में मानव है पशु बन जाते।
श्लोक—आहार निद्रा भय मैथुनञ्च
सामान्य मेतत् पशुमिनराणाम्।
धर्मो हितेषांमधिको विशेष:,
धर्मण हीना पशुभिर्समाना।
अर्थ—भोजन खाना सोना और मैथुन करना
और बलवानों से निर्बल होकर डरना।
है नीति शास्त्र का वचन ध्यान उर धरना,
है सब जीवो में कर्म बराबर करना।

इक धर्म अधिक बतलाया, जिससे मानुष कहलाया,
जिसने नहीं धर्म कमाया निष्फल ही जन्म गंवाया,
क्या शिक्षा करी विचित्र बताकर चित्र धर्म बिन मित्र,
बनते पशु पक्षी मनुज समाना । है धर्म चीज

(८८)

धर्मार्थ काम मोक्षाणां यस्ये कोऽपिन विद्यते,
अजामल स्तनस्येव तस्यजन्म निरर्थकम् ।
जीवन के फल धर्मादि चार कहलावें ,
जो जन इनमें से नहीं एक भी पावें ।
जैसे बकरे के गर्दन में थन व्यर्थ कहावें,
बस ऐसे खोवे जन्म, शास्त्र कहलावें,
जिन किया धर्म नहीं धारण है यही दुःखों का कारण
करे वेद शास्त्र उच्चारण हो तीनों ताप निवारण
है यही परम उद्देश्य मिटे जाए क्लेष उपदेश सांख्य में,
ऋषि कपिल देव भगवान बतावें । है धर्म

(८९)

येषांन विद्या न तपो न दानं ज्ञान न शीलं न गुणो न धर्मा,
ते मर्त्य लोके भुवि भार भूता मनुष्य रूपेण मृगाश्च रन्ति ।
न विद्या ही कुछ पढ़ी न तप ही कीना,
नहीं किया दान नहीं ज्ञान हुआ मति हीना ।
नहीं शीलवान नहीं गुणी धर्म नहीं चीना,
पशु के समान गुरु हुआ जगत् में जीना ।
पाऐगा जीवन प्यारा फिर भी नहीं धर्म विचारा,
सब जीतो बाजी हारा भारी पर लोक बिगारा ।

तू आया था किसलिए कर्म क्या किए सोचतो हिए,
रोवेगा अखिर में नादान। है धर्म चीज।

झूलना (६०)

इस धर्म से ही पुरुषोत्तम राम कहाऐ,
इससे ही योगीराज कृष्ण पदपाए,
लासानी दानी हरिचन्द्र कहलाए,
इससे ही सम्वत् विक्रम का निशान ॥१॥
मोर ध्वज से आरे की धार चलवाई,
शंकर वोभोज भर्तरी ने भी पदवी पाई,
हुए लेखराम विख्यात इसी से भाई,
हो गया हकीकत इस पर ही कुर्बान है।
जब यही नष्ट हुआ पाया, हमने संस्कृति का नाम डुबाया,
तब दयानन्द ऋषि आया, झट आर्य समाज बनाया।
हो धर्म वीर हुश्यार ऋषि ऋण उतार धर्म का हार,
वेद पढ़ बनो ऋषि सन्तान।
है धर्म चीज वह।

दादरा (६१)

रहना धर्म के आधार-आधार मेरे प्यारे।
बिना धर्म के कोई न साथी, मतलब का है संसार-संसार मेरे प्यारे,
अन्त समय यह ही संग जावे चले न कुटुम्ब परिवार-परिवार मेरे प्यारे।
दम निकले सुत नारिबन्धु सब, फूक दें ढोला-सा डार-डार मेरे प्यारे,
कोई मरघट तक संग जावे धर दे चिता के मझार मझार में मेरे प्यारे।
काष्ट सा फूंक अग्नि में देवे कोई न करतार यार प्यारे मेरे प्यारे,
पीठ फेर सब वापिस लौटें ऐसे बने लाचार-लाचार मेरे प्यारे।

जब यह धर्म रहे है संग में तभी करे हित यार यार मेरे प्यारे,
राम कहे हालैण्ड निवासी करता है ज्ञान उच्चार उच्चार मेरे प्यारे ।

दादरा (६२)

भय खैहो तो कैसे धर्म रहे ॥
भय से तुम धर्म को तजिहो, ईश्वर के सन्मुख का कैहो ।
ईश्वर की आज्ञा धर्म है भाई, ईश्वर से लड़कर कहां रहियो ।
याकर लेना वाकर देना करनी पर बस तुम डटि जैहो ।
पाप बिपत्ति की जड़ है भाई पाप करे से संकट सहियो ।
शीतल कहते मानो जी प्यारे नहीं मानोगे तो पछितेहो ।

भजन (६२)

मेरी बिनती सुनो धर ध्यान ।
गृह आश्रम ही सर्व श्रेष्ठ है क्या कुछ कहूँ बखान ।
पुरुष तो है गृह की शोभा पुरुष की स्त्री जान ।
स्त्री की पति व्रत है शोभा रक्षा करे भगवान ॥
दौनो की शोभा प्रीति परस्पर, पानी दूध समान ॥
जिस घर में दौनो यह खुश हैं यह घर स्वर्ग समान ।
मुख की शोभा मृदुल वचन है हात की शोभा दान ।
दान की शोभ पात्र हो अच्छा कह गए पुरुष महान ॥

भजन (६३)

तुम बन जावो चतुर सुजान ।
सब मिल जुलकर जग में रहिए सुख होवे अति मान ।
पर उपकार है मन की शोभा तन की शोभा प्राण,
धर्म से शोभित जीव बताया धर्म ही सदा प्रधान ।
वेद शास्त्र की ओम् है शोभा और जीवन की ध्यान,

ध्यान की शोभा ओम् जाप है, इतना लीजे मान।
कहे जय जय राम नगर की शोभा जिसमें हो आर्य समाज
समाज की शोभा कर्म काण्ड है, सब सदस्य बनें गुणवान।

भजन (६४)

उठो सनातन धर्मियो, तुम भी सुमरि गणेश,
बिगड़े कामो को तुम बनाओ मिटे समस्त क्लेश।
मित्रो जय जय राम यह, विनय करे कर जोड़,
करो काम उपकार के सारे, वैर भाव को छोड़।
अब त्याग के वैर विवाद को कुछ कर लो अपनी भलाई,
जिसने हो तुमको समझाया, उसी से तुमने वैर बढ़ाया।
भांति-भांति का शोर मचाया, करके बन्द सहायता,
उल्टी हानि पहुँचाई।

फूट पापनी का यह फल है, सारे हम जो बने निर्बल हैं,
जिस घर मेंरहती कल कल है क्यों नहीं वह बर्बाद हो,
बने क्यों न नरक की खाई।

मानो मानो प्यारे भाई, वैर भाव को दो बिसराई,
करके आपस में इकताई, बजाओ वैदिक नाद को,
उज्ज्वल उसकी प्रभु ताई।

संध्या हवन करन नितलागो, बद रस्मों को जल्दी त्यागो,
प्यारे भाई जागो-जागो छोड़ बुरी मर्याद को,
बनो वेदों से अनुयायी।

हार जीत दिल से बिसराओ, सत्य धर्म मे प्रीत बढ़ाओ,
बेदो की अब शरण में आओ, जिससे अधिक सुधार हो,
और बल बुद्धि बढ़ जाई।

दादरा (६५)

मत लड़ना आपस में भाई रे।

कौरव और पाण्डवों ने आपस में लड़कर भारत दिया डुबाई रे।

पृथ्वीराज जयचन्द ने लड़कर अपने को दिया मिटाई रे।

जरासिंधु ने कृष्ण से लड़कर कर दी कुल की सफाई रे।

लाखों करोड़ो राव व राजे, बिगड़े करके लड़ाई रे।

आपस के झगड़े काही सबब है,

सुरीनाम पै अफत जो आई रे।

भाइओ जो अपना हित चाहो, वेदों के बनो अनुयायी रे।

भजन (६६)

बोली एक अनमोल है बोली जाय तो बोल। दोहा

हिए तराजू तोलकर मुख से बाहर खोल

बचन तू मीठा बोल, बाणी का बाण बुरा है। टेक

जिसकी बोली में मीठापन है उसको तो हर जगह अमन है।

जी चाहे जहां डोल।

इस बाणी से प्रीति हो गहरी, हां यही बना देती है बैरी,

और देती कलेजा छोल।

इसे मित्र शत्रु सब जाने, और कोयल काक पहचाने।

जब देती मुखड़ा खोल ॥

सबकी ही कीमत होती है, हीरा मणि क्या मोती है।

नहीं बाणी का है मोल ॥

कहे तेजसिंह सच ही बोलो, मत असत्य कभी मुख से बोलो,

है कच्ची जिसकी तोल ॥

ख्याल (६७)

दोहा—हरि सुमिरन कर जीव जड़ तुझे कहूँ हर बार।

सारी उमरि नींद मे खोई ए मतिमन्द गंवार ॥

हिन्दूपन से धोय हाथ अब परमेश्वर के दास बनो।
करो कर्म अनुकूल वेद के फिर तुम आर्य खास बनो॥

चौक (१)

बिन धर्म सुख मिले न सपने नाहक मन भटकाओ।
दम्भ कपट छल त्याग न जब तक शुद्ध मार्ग पर आओ।
चाहे जितनी गंगा नहाओ गया प्रयाग चाहे नित जाओ।
सुख की शकल देखि नहीं पाओ चाहे दुनियां में धाओं।
सत्यधर्म में श्रद्धा लाओ पाओ सारे भोग घनो॥
दश लक्षण जो कहे धर्म के मनुशास्त्र में हैं सुखदायी।
पहला धीरज क्षमा दूसरा दम तीजा जानो भाई,
है चौथा अस्तेय, पांचवा दिया शौच पुनि बतलाई।
इन्द्रिय निग्रह छटा सातवां बुद्धि की निर्मलताई।
अष्टम विद्या नवम सत्य अरु दशवें क्रोध का नाश करो॥

दादरा (६८)

काहे खोवे उमरिया अनारी रे

ममता माया के वश होकर गर्वित है तू कुटुम्ब के ऊपर,
नाम न लीना उसका छिनभर, प्रभु बिन रहे दुखारी रे।
संध्या हवन तूने बिसराया पितृ यज्ञ का ध्यान न आया,
छल से तूने धन को कमाया, क्या हो सके सुखारी।
काल तुझे नित आन जगावे, घटा अपनी गूंज सुनावे।
क्यों नहीं चेते समय बितावे, भक्ति का बनजा भिखारी रे॥
अजर अमर जो है सर्वोपरि, जिससे तेरी रही रुचि फिर।
सुनो वही है सच्चा पितृवर, रख ले भरोसा भारी रे॥

भजन काफी (६९)

कोई तेरे काम न आवे, भज अमर अजर अविकार।
सुत, पितु, मात, भ्रात प्रिय भगिनी धन दारा परिवार॥

सन्ध्या यज्ञ योग जप छोड़ा छोड़ा पर उपकार,
वैदिक धर्म का मर्म न जाना किया निन्द्य आहार।
बाइबिल और कुरान पढ़ करके सब बैठे धर्म बिसार,
आदि काल की विद्या का फिर कैसे होय प्रचार।
सब प्रकार सिद्ध हो रहा, यह असार संसार,
तन धन यौवन जात छिनक में प्रभु है सिरजन हार।
आय काल जब तुम को गहि है खोंचे फांसी हार,
फिर बचाए प्राण न बचि है, हुई है यह तन छार।

भजन (१००)

मरता किसके इश्क में करता किस पर प्यार,
सब मतलब के मीत है, देखा गया बिचार।
सब स्वार्थ का संसार है तू किस पै प्यार करता है, टेक
जब तलक तू करके भाई तब तक सारे करें बड़ाई।
पिता भतीजे सुसर जमाई कुनबा नातेदार है,
दिलबरी का दम मरता है। तू किस पै······
जब तू शक्ति हीन हो जावे अपनी हालत कुछ फरमावे,
यार दोस्त कोई पास न आवे मिट जाता सत्कार है,
कम्बख्त नाम पड़ता है। तू किस पै······
जिनके प्यार में ओम् बिसारा, धर्मा धम तक नहीं बिचार,
उस कुनबे ने किया किनारा कौन यह गमख्वार है,
कह कह के यों मरता है। तू किसे······
मत बन जान बूझकर भोला, है खुद गर्म यार बिन बोला है,
जो यह है मनुषी चोला, फिर मिलना दुश्वार है
जप उसे जो दुख हरता है। तू किसे······

भजन (१०१)

दोहा—धन यौवन को पायके क्यों करता अभिमान।
चन्द रोज की चांदनी कोई दम का मेहमान ॥
मत ऐंठ मीत अभिमान में ये जरासी जिंदगानी है ॥ टेक
बड़े-बड़े शूरवीर धन वाले, अरु हकीम तरहदार निराले।
सितमगार मुंह कर गए काले, बसे जाय शमसान में,
गई टूट हुकमरानी है।
दर्द दूसरे का न बिचारे, बिन अपराध गरीबन मारे,
दुखी दीन को नित्य पछारे, सूझत नहीं अज्ञान में,
तुझे यम की मार खानी है।
लाखों गलों पर छुरी चलावे, खूंखारी से बाज न आवे,
जुलम करे कुछ दर्द न आवे सोचत नहीं जहान में,
उस ईश की रजधानी है।
जुल्म किसी पर मत कर भाई, यह दुनिया ईश्वर ने बनाई,
अब से छोड़ कपट कुटिलाई, लग जा उसके ध्यान में,
जो अच्छी गति पानी है।

गजल (१०२)

ये दुनिया चन्द रोजा है ओम् का ध्यान धर लीजे,
गुजरती आयु जाती है, सभी विधि से सुधर लीजे।
न जाने कौन से क्षण में बजेगी आखिरी नौबत,
नकारा कूच का बजता है इस पर गौर कर लीजे।
पड़े सोते हो तुम अब तक गए साथी निकल कोसों,
कठिन रस्ता है मंजिल दूर उठिये कर सफर लीजे।
खुशी के साज ओ सामां फिरे है जिस पै तू फूला,
हमारा मानकर कहना हटा इनसे नजर लीजे।

ओम् के प्रेम साधन से मगन होने का कर उद्यम,
जमा के मन को संध्या में परमसुख की लहर लीजे।

गजल (१०३)

भूला है किसी पर ए मानुष, फिरता है किस पै तू यू मगन,
क्या खयाल तुमने कर लिया, क्या अमर है तेरा ये तन।

इत्र लगाके जिस पर तुम होते हो दिल में सुर्खरू,
रखना जहन नशीन तू नष्ट होयगा यह इक दिन।

करते तुझसे अब जो प्यार, मात पिता और पत्नी यार,
देखेंगे सब यह इक बार जलते हुए तेरा बदन।

प्रीति परस्पर अब तू कर सबसे मिल तू झुका के सर,
निन्दा भी कोई करे अगर स्तुति ही तू अपनी उसको गिन।

धर्म का तू प्रचार कर जान जाए तो भी न डर,
होगा तू इस तरह अमर अगर करेगा यही यतन।

भजन (१०४)

है थोड़े दिन जग में रहना मत कड़वी बोली बोल।
वैमनस्य घर घर में लड़ाई, दुश्मन है भाई का भाई,
जग में अशान्ति फैलाई, बुद्धि तुला पर तोल।
मौन व्रत उनको बतलाया, जिनसे मीठा बचन न आया,
क्यों नहीं प्रभु का भक्त कहाया मन की घुण्डी खोल।
आवागमन की कट जाए फांसी, कटे फंदे तेरा लख चौरासी,
जपले निराकार अविनासी ये ही रत्न अनमोल।
किसी जीव का मन न दुखावो, धर्म अहिंसा जग फैलावो,
पाठक कहे यो प्रभु को पावो वह है अगम अतोल।

भजन (१०५)

क्या तन मांजता रे अखिर माटी में मिल जाना।
माटी ओढन माटी बिछावन, माटी का सिरहाना,
माटी का कलबूत बनाया, जिसमें भंवरा समाना।
माटी कहे कुम्हार से तू क्यों रूंधे मोय,
एक दिन ऐसा आएगा, मैं रूंधूगी तोय।
चुन चुन लकड़ी महल बनाया लोग कहें घर मेरा,
ना घर तेरा न घर मेरा, चिड़ियां रैन बसेरा।
फाटा चोला भया पुराना कब तक सीवें दर्जी,
दिल का महरम कोई न मिलिया जो मिलिया अलगर्जी।
मन का महरम ईश्वर मिल गयी उपकारन के गर्जी,
नानक चेला उमर भया जो गुरु मिल गए भर्जी।

भजन (१०६)

फिर दांव न ऐसा बराबार, उठ बीती जात नर तन बहार।
भज सकल सृष्टि का सृजनहार, जो घट घट व्यापक निर्विकार,
है वह मुक्ति दाता उदार, तज उसे होत क्यों जग में ख्वार।
हुए बड़े बड़े योधा अपार तिन्हें जात न लागी तनक बार,
जिन पर धन हीरा बे शुमार गए अन्त समय सब हातझार।
अब समझ सोच कुछ कर विचार, कर ग्रहण सार तजदे संसार,
है यही धर्म सब सुख द्वार हर को भज तन मन के विकार।
यह जीवन तेरा है बेकार तज अजहू नींद गफलत गंवार,
तू अपने जनम को ले सुधार, झख मारत काहे द्वार द्वार।

दादरा (१०७)

बांधो न गठरिया अपयश की,
है थोड़ी उमरिया दिन दश की।

अकड़ बेग यहां कितने ही आए गए भूमि में सब धसकी,
कोई दिन का मेहमान यहां तू, मतलेवे पोट विषय रस की ।
नहीं कजा से चलि है कज्जा की, ठसक रहे सब ठसकी,
अजहु विचार धर्म अपने की धीरे धीरे उमर जात खसकी ।
यम के द्वार भार पड़े भारी, बदी निकल जाए नस नस की,
भज प्रभु को मेरे भाई बेगि अब नहीं काल लेत है तोहिमसकी ।

दादरा (१०७)

चलना ही पथिक रह जाना नहीं ।
क्यों सोवे गफलत में ऐसा यहां एक पलका ठिकाना नहीं ।
तेरे संघाती कितने चले गए तेरा भी यहां कुछ थाना नहीं,
इस सराय में चोर बसत हैं उनमें गांठ कटाना नहीं ।
वली पहलवां हजारों ही आए । चलते समय कोई जाना नहीं,
जिस मालिक ने तुमको पाला, उसको तुमने पहचाना नहीं ।
झक मारत फिरता दुनियां में दीवाना है कुछ जाना नहीं,
यम को उत्तर देगा किस मुख से है कोई बाकी बहाना नहीं ।
अभी जगो तुम माठी नींद से फिर फिर नर तन पाना नहीं ।।

भजन (१०८)

कब लेगा ओम् का नाम उमरिया रही थोड़ी ।
कोन भूल में पड़ा सोचकर नाचे काल कुचाली सिर पर ।
लालच की लीला में फंसकर कैसी पूजी जोड़ी,
केवल खेल कूद मन भाया हित साधन में चित न लगाया ।
हाय अभागे पाप कमाया सच्ची संगत छोड़ी ।
मात पिता भ्राता सुतदारा रहे साथ परिवारन सारा ।
मानी मान मोह की धारा क्या दुर्मति मोड़ी,

अभी भी जीवन कोन सुधारे करनी की जड़ अब भी बिगारै।
नेंक न हरि की और निहारे दिया प्रेम लता तोड़ी ।।

भजन (१०९)

कर मलमल पछतावे जब मृत्यु तेरी नियराई ।
बड़े भाग मानुष तन पाई, किंचित हूँ कीन्हीं न भलाई ।
वृथा समय को दीन्ह गंवाई धर्म की कब हुँ सुधि नहीं आई।
बाल समय सब खेल गंवायो विद्या पढ़ी न धर्म कमायो
इन्द्रिय जीत न वीर्य बढ़ायो अब सोच समझ पछताई ।
युवा अवस्था आई तन में चूर भयो भारी यौवन में,
किए पार नहीं रहे भजन में यों ही सारी उमर गंवाई ।
बृद्धापन की बारी आई, लोभ मोह तृष्णा अधिकाई,
किए जन्म भर पाप को भाई, दीनी अपनी आयु घटाई ।

गजन (११०)

सुनोऐ मित्रवर इक दिन यहां से सबको जाना है,
करो शुभ कर्म निशबासर तभी आनन्द पाना है।
बने अज्ञानी फिरते हो न होता चेत है बिल्कुल,
अविद्या आदि से सोचो जरूरी चित हटाना है ।
जिसे ठहराया वेदों ने तुम्हारा फर्ज आवश्यक,
बड़ा अफसोस है देखो उसे तुमने न माना है ।
पड़े सोते हो गफलत में जरा अब आंख तो खोलो,
हुवा है प्रात उठ बैठो यहां से तुम को जाना है ।
न सम्पति काम आएगी न भ्राता मित्र सुतदारा,
अरे इनकी मुहब्बत में वृथा चित को फंसाना है ।
महामूर्ख भूल जगदीश्वर सकल सृष्टि के कर्त्ता को,
कभी मत भूलऐ भाई वही तेरा ठिकाना है ।

दादरा (१११)

कोई दम का यहां है बसेरा रे,
जिस घर को तू अपना जाने यह तो नहीं तेरा रे
बड़े वड़े शूरवीर और योधा कर न पाए यहां डेरारे,
काल बली ने इक दिन सबको आय यहां से खदेरारे।
विषय भोग में फंसकर मूरख ईश्वर से मुख फेरा रे,
नहीं जाने कब आवे बुलावा कर ले काम सवेरा रे।
कर ले भाई धर्म कमाई क्यों आलस तोहिघेरा रे,
भाई बहन मिल ओम् को भजलो पार होवे तेरा बेड़ा रे।

भजन (११२) वेद प्रचार

करो रे भाइओ वैदिक धर्म प्रचार।
दयानन्द कुल भूषण सबको कह गए बारम्बार,
भूमण्डल के जो है मतवादी, सब ही माने वेद अनादि,
तुमने उसकी याद भुला दी, बिन वेद पढ़े सारे भाई,
सब मानोगे तुम हार।
बिन विद्या ब्राह्मण हुए धूरत, क्षत्रिय बने नपुंसक सूरत,
वैश्य शूद्र हुए छलकी मूरत, धर्म काम को करें कलंकित,
करते है व्यभिचार।
एक वेद पढ़ विप्र कहावे, दोपढ़ले ऋषि पदवी पावे,
तीन पढ़े महर्षि कहलावे, ब्रह्म जो पढ़ले चार कहावे।

भजन (११३)

धर्म पथ फैलादो घर घर द्वार।
नगर नगर और ग्राम ग्राम में वेदों का करो प्रचार।
द्वेष निकालो प्रीति बढ़ालो, मन में सद् गुण धार,
थोड़ा है जग जीवन प्यारे लो अब याहि सुधार।

धर्म के कारण ऋषि दयानन्द जीवन गए निसार,
आर्य मुसाफिर लेखराम जी सर्वस्व गए हैं वार।
धर्म के कारण गुरु गोविन्द सिंह सह गए कष्ट अपार,
हटे न पीछे धर्म क्षेत्र से उनके राजकुमार। धर्म पथ फैला दो...
धर्म के कारण राजा हरिश्चद्र राज पाट गए हार,
रानी बिकी रोहिताश्व पुत्र संग भूपश्वपच के द्वार।
ग्यारह बरस का हकीकत, धर्म का अंकुर धार,
जान दे गया धर्म न छोड़ा कहे इतिहास पुकार।
माता तारुसिंह सा होना इस जग में दुश्वार,
मारे गए धर्म नहीं छोड़ा लो मन मांहि विचार।
ऐसे तुम भी बनो मित्रवर त्याग असत्य व्यापार,
तन धन धाम धरती है झूठे, धर्म को जानो सार।

भजन (११४)

फैलादो ब्रह्म ज्ञान जगत में।
सत्य धर्म और वेद पठन में अर्पण कर दो प्राण,
धीरज धारो मीठा बोलो तज दो हाथ अभिमान,
नित प्रति पंच यज्ञ का करना दे दीनों को दान।
जगत गुरु था भारत तुम्हारा, सबने किया बखान,
वेदों की प्रिय आज्ञा पालो, होवे फिर वह मान।
देश विदेश में घूम मचादो हो जावो सिंह समान,
चीन अरब आदि देशों में योरोप और जापान।
गुरुकुल में सन्तान पढ़ाओ तजो मोह की बान,
सच्चे मात पिता कहलाओ दो गुरुकुल को दान।
तुम्हरे हित ऋषि अर्पण कर गए तन मन और प्राण,
छज्जू कहे शीघ्र ही चेतो मिलो ऋषि सन्तान।

गजल (११५)

सभी दुनिया में वेदों की सदाकत होने वाली है,
सभी के दिल में वेदों की वह इज्जत होने वाली है।
लगी करने जो कन्याऐं यह यज्ञोपवीत धारण,
बशाने गार्गी हर एक महिला होने वाली है।
जमाने भर में डंका वेद का बजता है अब मित्रो,
तो दुनिया भर में अब कुछ और हालत होने वाली है।
हुई थी देव भाषा की जो हालत कुछ दिनों पहले,
वही अब फारसी की देखिए गत होने वाली है।
शरन में वेद की सज्जन सभी आने लागे अब तो,
ओम् की सब पै जाहिर सच्ची कुदरत होने वाली है।
न क्यों ए महर्षि तुम पै करें हम जानो दिल कुरबां,
तरक्की हिन्द की तेरी बदौलत होने वाली है।

दादरा (११६)

हम वेदों की शिक्षा सुनाए जाऐंगे
अपनी निन्दा पै ध्यान न देगें, सदा स्वामी की शिक्षा फैलाए जाऐंगे।
जैनी पुरानी किरानिन को मित्रों ऋषियों की वाणी सिखाये जाऐंगे।
हिंसा न करना बता करके सबको, कुरीति यहां से मिटाए जाऐंगे।
उल्टी राहों पर चलते जो भाई उन्हें सीधा मार्ग बताए जाऐंगे॥

गजल (११७)

दुनिया में चारो वेदों का प्रचार करेंगे।
जो कुछ ऋषि की आज्ञा उसे सिर पर धरेंगे॥१॥
होवेंगे अग्नि होत्र भी घर घर में सुबह शाम,
पितृ बलि वैश्य देव यज्ञ करेंगे,

होगा ग्रानन्द शान्ति घर घर में फिर जरूर,
वैदिक धर्म पै शीश अब आ आके चढ़ेंगे।
ईश्वर ने वेद सबके लिए हैं दिए हुए,
सारे ही मान इनका फिर करने लगेंगे।

गजल (११८)

केवल वेद ही जगत में कुदरत का कानून,
इसे त्याग मत कीजिए सत्य धर्म का खून।
तुमको सोते हो चुकी बरसें पांच हजार,
अब तो उठकर कीजिए बुद्धिवर वेद प्रचार।
पहले भारत में इन्हीं वेदो का खूब प्रचार था,
लोक और परलोक की खूबी का दारोमदार था।
उस जमाने में तो भारत विद्या का भण्डार था,
मातहत सब देश थे भूगोल ताबेदार था।
देखिए करवट बदल क्या रोशनी की बहार है,
अपने अपने धर्म में हर शख्स खुद मुख्तार है।
हर मजाहिब के कुतुब कानून पर भी विचार है।
खुद गर्ज बहकाने वालों पर खुदा की मार है।

गजल (११९)

कौल वेदों का भों जिसने नहीं माना होगा,
दीन दुनिया में न फिर उसका ठिकाना होगा।
साफ कह दूंगा मैं वेद के मत का कायल,
हाले दिल जिसको मुझे अपना सुनाना होगा।
जब मैं जानूं कि हुई आज सफल यह महनत,
वेद के मत में जब यह सारा जमाना होगा।

आर्य बन जिसने तजा मोह न ईर्ष्या प्यारे,
मुफ्त में जन्म उसे अपना गवाना होगा।
आर्य बनते हो मगर दिल दिल में समझे रहना,
क्रोधभय लोभ को दरिया में डुबाना होगा।
द्वेष तज करते हैं जो जाति की उन्नति भाई,
ऐसे लोगों पै फिदा सारा जमाना होगा।

भजन (१२०)

छोड़ा वेदों का पढ़ना कैसे होवेगा उद्धार।
देश देश में बजे वेद का डंका॥
क्या योरुप और पाताल अरब क्या लंका।
इस भूमि से होवे दूर अविद्या खंका॥
तो मिले फेर सुख चैन मिटै सब संका।
इसलिए समाज बनाए, स्वामी ने बहु दुख उठाए,
डूबे थे हमें बचाए अदभुत सुन्दर उपदेश सुनाए।
उनका था यही उपदेश सुधर जाय देश फैले उपदेश,
वेदो को माने सब संसार।
अब तो है भरोसा सबको मित्र तुम्हारा।
बने जहां तक तुमसे दीजै आप सहारा॥
फैले दुनिया में धर्म मिटै दुःख सारा।
दुष्टों का हो अपमान जाए मुखमारा,
बच्चों को वेद पढाओ करना उपदेश सिखावो।
धन देकर ट्रैक्ट छपावो, घर घर उनको पहुँचाओ :
सब वैर भाव तज दीजै तरक्की कीजै, विनय सुन लीजै
मुरारी सबसे कहै पुकार।

भजन (१२१)

कल्याण रूप जो वांणी हर जगह उसे पहुँचाओ
किस गफलत में तुम पड़े हो जागो जागो
इस घोर नींद को अब तो त्यागो त्यागो
करो प्रेम धर्म से पाप से मित्रो भागो भागो
पर उपकारी कामों से लागो लागो
यह है कर्त्तव्य तुम्हारा मत इससे करो किनारा
इसने सब देश सुधारा इसके बिन नहीं गुजारा
दो सबके कानों में डाल, अभी फिलहाल करो मत टाल
हुकम लासानी, जो ऋषि संतान कहाओ
वेदों के प्रचार में अपना तन मन दे दो
जो बने बांटकर धन में से धन दे दो।
चारों पन में से आप एक पन दे दो,
जीवन में इसके लिए सन्यासी बन दे दो,
मुल्कों मुल्कों में जाकर, सच्चे उपदेश सुनाकर,
पड़े जो भ्रम में उन्हें समझाकर, ईश्वर भक्त बनाकर,
बनो यश के तुम भण्डार करो उपकार मन में लो धार,
समझो सब प्राणी वैदिक सिद्धान्त समझाओ।

भजन (१२२)

कल्याण रूप जो वाणी हर जगह उसे पहुँचाओ।
छिपा विद्या का प्रकाश मिटा उजियाला'
हर एक अपना चिराग अलहदा बाला।
चोरों ने फिर चोरी का ढंग निकाला,
घर फोड़ फोड़कर मित्रो माल निकाला।

छिपा सूरज हुआ अंधेरा, भारत को चहुँदिश से घेरा,
कोई कहता यह मत मेरा और सब है झूटा तेरा ।
फिर करी ईश्वर ने दया,ऋषि एक भया ज्ञान दे गया,
वह बड़ा ही ज्ञान गुरुथा, मिलकर उसका गुण गावो, हर जगह···
जो ओम् की आज्ञा उसी को पालो ।
दो और काम सब छोड़, न उसको टालो,
सब मनुष्य मात्र के हृदय में उसको डालो ।
सच्चा है वैदिक धर्म और सब झूट निकालो,
सबको उपदेश सुना दो सीधा मारग बतलादो ।
दुनिया में घूम मचा दो सबके भ्रम भूत भगा दो,
लीजे जीवन का सार, करो अख्तियार वेद प्रचार कराओ,
यानी फिर मन माना सुखपावो । हर जगह

भजन (१२३)

करके विद्या कूंच, यहां से पहूँची इंग्लिस्तान में।।—टेक
भारत सुतन अनादर कीना, विद्या ने तुरत देश तज दीना,
चलत समय भाख्यो अति दीना, भर के जल अखियान में ।
कहां गए ब्रह्म सनकादिक गौतम पांतजलि उद् दालक,
रहा न कोई मम ग्राहक आर्यों की सन्तान में ।
शिव दधीच, हरिश्चन्द्र युधिष्ठर राम कृष्ण अर्जुन क्षत्रियवर,
कपिलकणाद व्यास से ऋषिवर राखे थे प्रिय प्राण में ।
महाभारत पश्चात् हमारा त्याग दिया करना सत्कार,
मूरखता का बजा नगारा अब तो हिन्दुस्तान मे ।
मूरखता ने पांव जमाया, धर्म कर्म सब मार गिराया,
नित दुख बढ़ता गया सवाया, भारत के दरम्यान में ।
प्रथम गमन विद्याने कीना पीछे सुख सम्पत्ति चलदीना,
घेर देश दुर्गति ने लीना आवे नहीं बयान में ।

हे प्रभु कुमति निवारण कीजे, विद्या फिर दुनिया में दीजे,
सारा दुःख निवारण कीजे जो फंस रहा दुख महान में।

गजल (१२५)

विद्या पढ़ावो जहां तक हो तुम से,
बिगड़ी सुधारो तुम्हारी सन्तान है।
हम सब पर छाई अविद्या की रात्रि,
तिस पर घटा घेर लाया अज्ञान है।
विद्या से शून्य है यह जनता हमारी,
कभी से हीन अब जाति अभिमान।
संशय निवारण अब हो इनसे क्योंकर,
अनपढ़ पुरोहित और पढ़ाय जहान है।
धनवन्तरी सा कहां रहा वो चिकित्सक,
करै औषधि और बतलावे निदान है।
कहां तत्ववेत्ता और सांख्य कपिल जी,
कहां बादरायन जो दुनिया का मान है।
कहा पंतजलि महर्षि भारत का,
योग और महाभाष्य जिसका प्रधान है।
कहां जैमिनी जी मीमांसा के कर्त्ता,
धर्मों का तुमको सुनावे विधान है।

गजल (१२६)

कहां है कणाद जी का दर्शन वैशेषिक,
नहीं करता अब उन पै कोई ध्यान है।
बाल्मीकि और कालिदास जी कहां हैं,
अलंकार जिनका महान रस की खान है।

कहां विश्वकर्मा शिल्पकार चातुर,
जिनकी बनावट का पुष्पक विमान है।
सुधर्मा कहां सभा भवन बनाया जिसने,
साची जो पूछो तो भारत महान है।
ऐसे थे महान पूर्व पुरखा तुम्हारे,
क्या हैं आज बताओ पण्डित तुम्हारे।
अविद्वान का सारा जीवन व्यर्थ है,
ऐसे जीने से तो मरना प्रधान है।
विद्या से बनता है राज्य मंत्री है,
विद्या से बनता सभा में प्रधान है।
विद्या के बिना नर बनचर के सदृश,
विद्या के बिन मनुष्य पशु के समान है।

भजन (१२६)

राजा अपने देश में पाता है समान,
बुद्धिमान नर हर जगह पाता है समान।
उस पिता को बैरी जानो, जिसने नहीं पुत्र पढ़ाया,—टेक
बिन विद्या मूरख कहलावे, जब तक जिए दुख उठावे,
जब कही विद्वानों में जावें पाते है अपमान।
गुणियों में मूरख नर ऐसे हैं हैं बगुले हंसों में जैसे,
बैठे लगें कुशोभित कैसे लगेंगे शोभावान
वहां जाकर पछताया। जिसने······
पिता का यह कर्त्तव्य कर्म है, सबसे पहला यही धर्म है,
समझो इसके गूढ़ गर्भ को, पढ़ाओ निज सन्तान।
बस वही पिता कहलाया ॥ जिसने······
पुत्री और पुत्र पढ़ जावेंगे, सभी दुखों से छुट जावेंगे,

सारे इच्छित फल पावेंगे, कहते पुरुष महान।
ऋषियों ने यही फरमाया ॥ जिसने······

भजन (१२७)

दोहा—बिन विद्या संसार में बुद्धि भई विपरीत
शुभ मारग तजकर चलै तब कैसे होवे जीत,
उल्टी हो गई रे बिन विद्या के बुद्धि हमारी।—टेक
सत्य असत्य का बिल्कुल हमको नहीं रहा कुछ ज्ञान,
हैवानों से भी बढ़कर हुए आज इन्सान।
जन्म मरण के दुखद चक्र में भोग रहे दुख भारी,
भीख मांग खावें फिर भी बनते ब्रह्म अनारी।
देखो मुक्ति नहीं मिलती है बिना हुए सत् ज्ञान,
तब तो वृथा तीर्थ व्रत पूजा गंगा जमना, कान्हान।

गजन (१२८)

विद्या पढ़ाओ जहां तक हो तुम से,
सुधारो बिगड़ी दशा तुम्हारी सन्तान है।
विद्या है गुप्त धन, छिनता नहीं है,
न चोरी का डर है व अग्नि में जलता नहीं है।
विद्या बिना वृद्ध भी बच्चे के समान है,
बालक भी विद्वान वृद्ध से सुजान है।
चिरजीवी है नाम विद्वद् जनों के,
देखना चाहो तो असंख्य प्रमाण है।
शंकर और दयानन्द की विद्वत्ताका,
द्वीप और द्वीपान्तर में प्रसिद्धि व मान है।
उनके सदृश ही और भी तो थे कितने,
बताए कोई पता न नाम है न निशान है।

विद्या से होती है बुद्धि की वृद्धि,
विद्या के अक्षरों से आनन्द का ज्ञान है।
विद्या से होती है सन्तोष प्राप्ति,
विद्या से गुणियों का गौरव महान है।

भजन (१२९)

पापी मत सोवे पड़ा उठ जाग धर्म पहचान,
मुश्किल से यह देह थी पाई सो अब तूने सोय गंवाई,
तज गफलत नादान।

गया समय फिर हात न आवे, पीछे फिर तू क्यों पछतावे,
मौत सिरे पर जान।

अर्जुन भीम से योद्धा भारी काफी कौरव सेना सारी,
है तू कहां कर ध्यान।

मनुष्य देह की नाव बना ले धर्म कर्म का चप्पु चलाले,
अब जल्दी कर नादान।

दादरा (१३०)

तूने सारी उमरिया गुजारी रे।
शेर—बालापन गयो खेल में खोई जवानी प्यार में,
नित्य प्रति कीन्हे कलह बेड़ा है तेरा मजधार,
अब मरने की बारी आई रे तूने।
शेर—खेली चौसर हिंसा कीन्ही दिन का सोना बढ़ गया,
दूसरे व्यसनों में पड़ के पाप का झण्डा गढ़ गया,
फिर करते हो सुख की त्यारी रे।
शेर—चुगली कर वे काम किए जो नहीं थे करने चाहिए,
बिना कारण बैर बिसाए डाह किए फिर दुख दिए,
पछताने की बारी आई रे।

शेर—चोरी कीन्ही जुआ भी खेले गालियों देते दिन गए,
लड़ना भिड़ना सबसे कीन्हा पर अब तो आयुष दिन गए,
काम, क्रोध शत्रु हैं भारी रे।
शेर—ध्यान करले उस ईश्वर का जिसने जगत उत्पन्न किया,
अब तो चेतो नींद तजो जो पूर्ण सुख चाहो लिया,
तुम्हें होगा यही सुखकारी रे।

भजन (१३१)

जो चाहते हो धर्म कमाना उठकर उपकार करो,
तन मन धन सब अर्पण करके वेदों का विस्तार करो।
बहुत कष्ट तुम उठा चुके हो वैदिक मारग छोड़कर,
आओ भूले भटके भाइओं उसको फिर अख्तियार करो।
मत घबड़ावो बहुत सतावें तुम को मूरख आदमी,
प्राणी मात्र की तुम सेवा से मत दिल को बेजार करो।
कृष्ण व्यास आदिक ऋषियों को दोष लगाना छोड़ दो,
अपने बड़ों की इज्जत को ऐ प्यारो मतख्वार करो।
विवाह आदि के मौको पर नचा नचाकर रण्डियां,
सोचो अपनी सन्तानो को क्यों वृथा बरबाद करो।

भजन (१३१)

जो चाहते हो धर्म कमाना, उठकर कुछ उपकार करो,
अधो गति को पहुँच चुकी है मित्रो संस्कृति तेरी।
इसको संभालो तुम अब भाइओ मिलकर ये शुभ काम करो,
राग ईर्ष्या द्वेष वैर तज, कर्म करो निष्काम सब।
धर्मी प्रेमी पर उपकारी पुरुषों का सत्कार करो,
परमेश्वर के बनो उपासक जो चाहो सुख धाम को।
यज्ञ हवन से नित्य सुगंधित तुम अपना घर बार करो,

एक ईश जगदीश ब्रह्म को अपने चित में धार लो,
किसी पैगम्बर पीर औलिया की मत पूजा यार करो।
बहुत दिनो से नैया पड़ी भंवर के बीच में,
विनय करे जय राम ईश्वर, अब तो इसको पार करो।

भजन (१३२)

अब तो चेतियोरे, तुम हो संस्कृति के प्यारे,
गजनी गौर तातार से थे आए मुहम्मदशाह,
लूट खसूट ले गए धन सब, कर गए देश तबाह ॥१॥
जगह-जगह पर आर्यावर्त में हुए थे कत्ले आम,
जला जला हा वेद मुकद्दस कीन्हे गरम हमाम ॥१॥
दिखा-दिखा तलवार की दहशत बहुत किए बेदीन,
सदहा बिचारे राजदुलारे लिए जोर से छीन ॥३॥
प्यारे धर्म रक्षा निमित्त यहां हुए बहुत किए वे दीन,
गुरु गोबिन्द सिंह के लाडले बेटे धर्म पै हुए बलिदान,
नन्हा बालक वीर हकीकत, क्षत्रिय सुत बलवीर,
धर्म न छोड़ा मरा धर्म पर खाकर के शमशीर ॥

भजन (१३३)

अब तो चेतियोरे तुम भारत के राजदुलारे।
और सैकड़ों धर्म के हित हुए कलेजा खाक,
पद्मावती पतिव्र.ा धर्म पर जलकर हो गई खाक ॥१॥
अब तो जागो निद्रात्यागो दूर करो यह ख्वाब,
रही सही हालत को अपनी नहीं करो खराब ॥२॥
ऋषि दयानन्द तुम्हें जगागए सहकर कष्ट महान,
पर उठकर सो गए फिर भी उल्टी चादर तान ॥

जी सज्जन जन रहे जगाते ऋषि का सुन उपदेश,
उन्होंने अब आपस में लड़कर पैदा किया क्लेश ।।
जय जय राम की बिनती सुनलो कहता है कर जोड़,
पापिन फूट को दूर करो अब देखो देश की ओर ।।

गजल (१३४)

प्रभू जी बेग हम सबको जगा देते तो अच्छा था,
किनारे डूबती नैया लगा देते तो अच्छा था ।
हजारों वर्ष से हम सब पड़े है घोर दुखों में,
भला अब दुख सारे ही भगा देते तो अच्छा था ।
जहां देखो वहां इसके विरोधी ही नजर आए,
इसे वह बाण अर्जुन का गदा देते तो अच्छा था ।
रहा कोई न शुभ साधन बढ़ी ही फूट की चर्चा,
इसे इक प्रेम माला में ही जड़ देते तो अच्छा था ।
करे क्या हम भला तुमसे दिली मंशा सभी जाहिर,
कला कौशल में फिर हमको लगा देते तो अच्छा था ।

गजल (१३५)

दिल अपना राहे हक पै लगाए चले चलो,
आगे ही आगे पांव बढ़ाए चले चलो ।
रस्ते से वेद पाक के जो हो रहे अलग,
उनको भी सत्य मार्ग दिखाते चले चलो ।
प्राचीन वेद वाणी के उद्धार के लिए,
गुरुकुल व पाठशाला बनाते चले चलो ।
हिम्मत दिखावो उनको जो निर्बल हैं आत्मा,
कमजोर नातवां को निभाए चले चलो ।

गुरुदत्त लेखराम दयानन्द की तरह,
वैदिक धर्म का नाद बजाए चले चलो।
माने न माने कोई यह उनका है अख्तियार,
तुम सच्ची सच्ची बाते सुनाए चले चलो।

गजल (१३६)

उठो नींद से अब सहर हो गई,
उठो रात सारी बसर हो गई है।
हुई सुबह और जानवर सारे जागे,
जनो मर्द है घर व घर सारे जागे,
शरारत के रसिया बशर सारे जागे,
उठे वह भी जो रात भर सारी जागे ।।१।।
उठोऐ बुजुर्गो की पत खोने वालो,
उठो बाप दादों की मत खोने वालो,
उठो अपनी अकलो सूरत खोने वालो ।।२।।
जमाने की रंगत बदलने लगी है,
हवा और आलम में बहने लगी है,
उठो धूम दुनियां की ढलने लगी है,
हर इक कौम गिरकर समलने लगी है ।।३।।

भजन (१३७)

दोहा—कुछ विचार तो कीजिए प्यारे धर्म के साथ,
बिल्कुल इसे डुबाय के क्या आवेगा हाथ।
टेक—तुम्हें क्या हाथ आवेगा इस सत्य की नाव डुबोकर।
क्या लाभ देत दिखलाई जो करते हो व्यर्थ बुराई,
क्या मरते समय भी भाई, कुछ साथ तेरे जावेगा ।।१।।
काम उल्टे कर रोते हैं रो-रो के आंखें खोते हैं,
सब सुध विसार सोते हैं कौन धीरज बंधा पावेगा ।।२।।

तुम्हें दीखा है किसका सहारा, जो किया धर्म से किनारा,
अब स्वामी न जिन्दा तुम्हारा जो इतना दुख उठावेगा।
उठो भाई होश संभालो अपने बोझको आप उठालो,
अब गुरुकुल पर दृष्टि डालो ये बेड़ा पार लगावेगा।

भजन (१३८)

न हिम्मत हार नींद सुख पावोगे मेरे भाई,
रहो न हरगिज न्यारे न्यारे, मिलकर बैठो सारे सारे,
प्रेम प्रीति से मिलकर सत्या सत्य नितारनारें,
हालत अपनी देखो भालो ऐसी कोई तज वीज निकालो।
सारे धर्म जाति के जिससे कष्ट निवारनारे,
बड़े तुम्हारे आलिम भारी, तुम पर गफलत हो रही तारी।
छोड़ी गफलत आवे जरा उधारनारे॥
देखो वेद उपनिषद दर्शन, लाखों तरह के है उनमें फन,
खोलो इनको मित्रो तनिक विचारनारे।
ब्रह्म विद्या में यह पूरन, लौकिक विद्या का भी मखजन,
भूल के भी भाइओ इनको नहीं बिसारनारे।

भजन (१३९)

कैसा शोक है रे, सभी भाई अति दुख पाते।
वेद न कोई पढ़े पढ़ावै, शास्त्र दिए धरि दूर,
पढ़ पढ़कर बेकार पुस्तकें करी धर्म की धूर॥१॥
ब्रह्मचर्य की प्रथा उठा दी, बालक गृही बताए,
बानप्रस्थ सन्यास कहां फिर चहुँ दिशि कुमति लखाए॥२॥
राजपाट धन धर्म धाम पर निर्मय दौड़ी हार,
दुख दरिद्र दुविधाने घेरे, कहींन होत सुधार॥३॥

चोर उचक्के और ठगों ने कर राखी नित लूट,
हिल मिलकर भाई नहीं रहते घर घर फैली फूट ॥४॥

भजन (१४०)

कर लेहु सुधार फिर से अपने को भाई ।
वर वैदिक धर्म प्रचारो, नाना मत पंथ बिसारो,
राखो सभी जनो से प्यार ।१॥
तन पर घर के पट धारो, धनको मत बाहर डारो,
सभी सीखो शुभ ब्यौहार ॥२॥
तजि दुमति सुमति पसारी, कर्त्तव्य कभी न बिसारी,
सभी पावो उच्च अधिकार ॥३॥
सन्तान न शेष तिहारो, सब मिल जुल अवनति को टारो,
कहता जय जय राम पुकार ॥४॥

भजन (१४१)

भूले जाते हो तुम हाय, वैदिक धर्म सनातन वाले ।
हम सब उनकी है सन्तान, जो थे भूमि के विद्वान,
गौतम पंतजलि महान सब तत्वों को जानने वाले ॥१॥
थे श्री रामचन्द्र महाराज पितु आज्ञा पर छोड़ा राज,
नहीं स्वीकारा पद युवराज, पुरुषोत्तम कहलाने वाले ॥२॥
अर्जुन भीष्म हुए बलवान, जिनके लख संहारी बान,
अब तज ब्रह्मचर्य की बान हैं वल छीन कराने वाले ॥३॥
तुम ही तो थे सब गुणवान गाड़ी ये क्या रचे विमान,
सब परदेशी गए धन वान नई कल तार बनावन वाले ॥४॥
अब भी मानों बात हमार मिलकर कर लो वेद प्रचार,
भाइओं तब ही होय उधार होजावो मान बढ़ावन वाले ॥५॥

भजन (१४२)

ढूढ़े सारे शास्त्र पुरान, पद हिन्दू कहीं न पाया।
मनुवेद और छः हो शास्त्र में, पता मिला नहीं कोष मात्र में,
हिन्दू पद नहीं मिला तंत्र में, यह सत बचन सुनाया,
पद हिन्दू कहीं न पाया ॥१॥
लुगत फारसी में गयास है उसमें हिन्दू लिखा खास है।
देखो खोल के जिसके पास है, काफिर चोर बताया ॥१॥
जब संकल्प पढ़ों हो भाई, शब्द आर्य है देत सुनाई,
फिर क्यों छाई है मुर्खताई, हिन्दू वहां न आया ॥२॥ पद······
यह नाटक यवनों का सारा, हिन्दू रख दिया नाम हमारा,
कहे राम जो मित्र तुम्हारा यह नयागीत कथ गाया ॥४॥ पद······

भजन (१४३)

तुम्हें शर्म जरा नहीं आती, पद हिन्दू कहलाने में,
बहुत समय हिन्दू कहलाए अर्थ समझ में कभी न आए।
स्वामी जी ने भी समझाया सच्ची है आर्य जाति।
क्या काफिर बन जाने में ॥
लुगत में हिन्दू देखा भाला, डाकू चोर अर्थ है काला,
अब तो खासा हुआ उजाला, कैसी अंधेरी भाती।
है लाभ श्रेष्ठ बाने में ॥
मत अब हिन्दू शब्द उचारो, अपना आर्य नाम पुकारो,
सदोपदेश सुन जन्म सुधारो, बनो धर्म के साथी।
नहीं देर मोक्ष पाने में ॥
सत उपदेश हुआ अब जारी, खुशी मनाओ सब नर नारी,
स्वार्थियों ने बाजी हारी, पीट रहे हैं छाती।
बर्मा कहे सोलाने में ॥

दादरा (१४४)

इसी कारण से तुझको जगाय रहे हैं ।
टेरे भूखा अनाथ नहीं देत कोई साथ वे रोकर के हमको रुलाय रहे हैं ।।

धूर्त और पाखण्डी जग में बने हैं योगी और दण्डी,
मत वेद विरुद्ध चलाय रहे हैं ।

कहीं डटे बैठे हैं किरानी, और कहीं उड़ि है कुरानी,
निज धर्म से मुक्ति बताय रहे हैं ।

कहीं पर साधु और पण्डे, कहीं चोर जार और गुण्डे,
हम लोगों में लूट मचाय रहे हैं ।

जागन को कहूँ जयराम, गए हैं कितने लोग जगाय,
क्योंकि सोने से कारज नसाय रहे हैं ।

गजल (१४५)

फंसा के काकुल के पेच में दिल, करोगे जीवन को ख्वार कब तक ।
हीरा खोकर के कांच लेते न होगी हरगिज मुराद हासिल,
तुम जिन पै मरते वे तुम से जलते निभेगी यारी ये यार कब तक ।
तुम्हारे माशूक बेवफा है, तुम नादानी से मरते उन पर,
खाते हो मुंहकी न बाज आते पिटोगे बीचो बाजार कब तक ।
दुनियां में आकर धक्के ही खाए, धोबी के कुत्ते न घाट घर के,
यह भी न सोचे अकलके दुशमन रहो यूं मिट्टी ख्वार कब तक ।
ये अच्छा मौका मिला है तुमको आंखो से परदा उठाके देखो,
नशा ये कैसा जवानी तुमने न उतारा जिसका खुमार अब तक ।
जगन्नियन्ता ऐ सच्चे स्वामी शरण में आए है हम तुम्हारी,
जयराम आके शरण पड़ा है सुनोगे इसकी पुकार कब तक ।

भजन (१४६)

टेक—क्या अब भी नहीं जागो ये सूर्य वैदिक निकला भाई।
उठो उठो गफलत को त्यागो, आयु बीती अब तो जागो,
खो बैठे सर्वस्व अभागे, कैसी नींद है छाई।
जग जाना इकबाल तुम्हारा, हा हा मिला खाक में सारा,
कहते सीना फटे हमारा अब तो सुना न जाई।
इष्ट मित्र निज के सुत नारी, प्राण प्रिया सन्तान तुम्हारी,
होती जाए बारी बारी बुरे कर्मों में जारी।
आखें मल कर मुंह धो डालो, सत्य ज्ञान के जल से नहा लो,
पुरुषार्थ का खड्ग संभालो अब राम कहे समुझाई।

गजल (१४७)

अब तो अबुध आलसी जागो।
उदित भयो विज्ञान दिवाकर मन्द मोहतम त्यागो,
डूब गए दुर्जन तारागण बृन्द विषय रस पागो।
साहस सर में कर्म कमल बन अब फिर फूलन लागो,
प्रेम पराग हेत सज्जन कुल भृंग समान अनुरागो।
सुख सम्पत्ति चकवा चकई ने मिल वियोग दुख त्यागो,
जाय दूर आलस उजाड़ में दैव उलूक अभागो।
सकल कला कौशल चिड़ियों ने राम राग प्रिय रागो,
हिलमिल गैल गहो उद्यम की पीछे तको न आगो।

भजन (१४८)

भाई धर्म बचालो, बिगड़ी बनाली होश सम्भालो,
जीना है दिन चार।
डूब चली है नाव धर्म को, बीच भंवर मंझधार,
प्राणों से प्यारा धर्म हमारा हमको छोड़ चलो भाई,

देखो प्यारो समझ लो तुम अब भी करलो सुधार,
धर्म मरा तो जान लो यह तुमको भी देगा मार।
धर्म बचाओ भाइओ तुम अपना भला जो चाहो,
सब जग धंधे झूठे हैं इनमें न दिल को फंसाओ।

भजन (१४६)

रहेगी मुख पर ये याद कब तक, रहेगा साहब शबाब कब तक,
ये नींद गफलत का ख्वाब कब तक बचोगे आखिर जनाब कब तक।
है चन्द रोजा बहार गुलशन न ये हमेशा रहे जवानी,
डरो तो यारो गजब प्रभु से करोगे लाखों अजाब कब तक।
रोते गए हैं यहां से कितने तुम्हीं अनोखे न ही सितमगर,
खेलोगे छुप छुपके दुबक कर चलेगी पट पर ये नाव कब तक।
दुनिया में है ये दो दिन का मेला, हिलमिल के रहना है सबको लाजिम,
ये चार दिन की हीं चांदनी है चलोगे तुम उल्टे राह कब तक।
ये उम्दा मौका मिले न हरदम ऐ सोने वालों विचार देखो,
आखें खोल अब दुनिया को देखो न हटेगा मुख का नकाब कब तक।

भजन (१५०)

भाई धर्म की नैया बचालेनारे, डूबी जाती किनारे लगा देना रे।
आपस में मिलजुल के भाई बनो, एक दूसेरे के सब ही सहाई बनो,
पुरुषार्थ का बीड़ा उठा लेना ने।
ये धर्म की नाव हमारी है, पड़ी बीच भंवर मंझधारी है,
कोई ऐसी तदवीर बना लेना रे।
किया पापों ने नैया जो भारी है, हुई इससे बहुत लाचारी है।
कर्म धर्म के चप्पू लगादेना रे।
छूट भैया से जो है जुदाई हुए, गोते खा खाके बहुत सौदाई हुए,
बांह गहके तुम साथ मिला लेना रे।

स्वामी जी आए विरोधन को टारन, सारे जगत की दशा सुधारन;
तुम कदम न पीछे हटा लेना रे ।

गजल (१५१)

है जाना देश-देशान्तर सनातन धर्म में भाई,
उसे क्यों बन्द कर तूने मुसीबत धर्म पर लाई ।
जिसे पाताल कहते थे वो है अब देश अमरीका,
ऋषि सन्तान जाते थे वहां अर्जुन कृष्ण सुखदायी ।
गए थे व्यास जी वहां पर, की अर्जुन ने शनासाई,
थे ये किसी की रियासत में बह सूरज बंश के राजा ।
उन्हीं की एक कन्या थी, ब्याह अर्जुन के संग आई,
पुराने रहने वाले हैं जो मैक्सीको रियासत के,
उन्हें रेड इण्डियन कहते, व कैसा धर्म ईसाई ।

भजन (१५२)

ऋषि ऋण कैसे उतारेंगे, लगी घर में फूट की आग,
जिन पर थी निगाह हमारी, जिन पर थी आशा भारी ।
कि वो बनकर पर उपकारी, देश की दशा सुधारेंगे ॥
उन्हें ऐसी मूर्खता छाई, लगे करने नित्य लड़ाई,
यह देता हमको दिखाई, यह सब काम बिगारेंगे ।
समझता था जिनको हितकारी, वही निकले दुश्मन भारी,
क्या जाने थी सभा बिचारी कि यह सब प्रेम बिसारेंगे ।
जो थे समाज के भूषण वही हो गए उनके दुश्मन,
लगे खुद आपस में भगड़न औरों को कैसे संवारेंगे ।
मन आपस में युद्ध रचाओ, तुम धर्म से प्रेम बढाओ,
कुछ तो दिल में शर्माओ तुम्हें क्या लोग पुकारेंगे ।

हाय ईश्वर से नहीं डरते हो, गारत समाज को करते हो,
सर मुफ्त पाप धरते हो, तुम्हें जो नरक में डारेंगे।
यों जयजयराम पुकारे तुम्हें ईश्वर शीघ्र सुधारें,
बढे मेल मिलाप तुम्हारे, यही हम अर्ज गुजारेंगे।

भजन (१५३)

क्या करना था क्या लगे करन हमें यही अचम्भा है।
कर्तव था ईश गुणगाना-शुभ कर्म और धर्म कमाना,
पर इनमें लगाया न तनिक मन। हमें······
था उचित वेद का पढ़ना, नित पंच यज्ञ को करना,
अब छोड़ दिए सन्ध्या व हवन ॥२॥ हमें······
सभी सत्य से प्रीति बढ़ाते और झूठ से चित्त हटाते,
तुम सत्य त्याग किया झूठ ग्रहण ॥३॥ हमें······
जो सबका ईश कहाता नहीं जिसे देख कोई पाता,
अब इसको भी लग गए गढ़न ॥४॥ हमें······
जो बुद्धिमान कहलावें, सबको उपदेश सुनावें,
वही खुद आपस में लगे लड़न ॥५॥ हमें······
मुश्किल से नर तन पाया, उसे भाइओं वृथा गंवाया,
नहीं आया तू ईश्वर की शरण ॥६॥ हमें यही······

खयाल (१५४)

उल्टे मारग चलकर तुम, अपने आप बर्बाद हुए,
विचार करके मन में देखो अब तुम हिन्दू खास हुए।
अतिनिन्दित जो नाम तुम्हारा विदेशियों ने रखदीना,
वास्तव में यह नाम सार्थक अब तो तुमने कर लीना।
अनाचार भरमार किए और अधर्म से रिश्ता कीना,
मूर्खता को मित्र बनाया धर्म अधर्म नहीं चीन्हा।

इस कारण से तुम्हारे मित्रो सब सुख सत्यानाश हुए,
पढ़ देखो इतिहारा तुम्हारा पुराने पुरखा थे कैसे ।
उल्ट पुल्ट क्या हुआ देख लो रहने तुम पहले जैसे,
सबब सोचिए इस अवनतिका यतन कीजिए फिर तैसे ।
पड़े रहोगे नींद गर्क में मिले नहीं फिर दो पैसे,
क्यों पड़ गए समझ पै पत्थर रूखसत होश हवास हुए ।

चौक (१५५)

हे जगदीश्वर ! जगत पिता अब तुम्हीं आपदा निर्वारो ।
दे विद्या बुद्धि ज्ञान करो इस मूरखता का मुंह कारो,
कठिन कुमति से हे करूणामय करो सभी का निस्तारो ।
परम ब्रह्म पूरण परमेश्वर दुष्ट कर्म से करन्यारो,
विनय करत जयराम तुम्ही से सब से निपट निराश हुए ।

भजन—हमारी पूर्व दशा (१५६)

शेर—एक दिन भारत यह सारे देशों का सरताज था,
जिस जमाने में यहा पर वेद मत का रिवाज था ।
टेक—भारत को सूना छोड़कर वह कहां गए महाराजे,
गए राम लक्ष्मन कहां शूरवीर बल धारी ।
जिनके बल से थी पृथ्वी कांपै सारी,
गए कहां युधिष्ठर भीम भीष्म ब्रह्मचारी ।
कहां परशुराम से अर्जुन से शस्त्र खिलारी,
कहा कर्ण गए कहां गुरु गोबिन्द लासानी ।
प्रताप सिंह बलवान विख्यात है जिनकी कहानी,
किए काज उन्होंने बड़े न मन में कभी डरे ।
युद्धों में लड़ते उनके रणमुण्डे भी गाजे ।। वह कहां गए······

कहां गए वशिष्ट और व्यास से ऋषि विद्याधर,
कहां कणाद गौतम कपिल जैमुनी मुनीवर।
कहां पतंजलि से ऋषि और पाराशर,
जिनके प्रताप से विद्या फैली जग में घर घर।
कहां गए पाठानी भाई जिन रचदई अष्टाध्यायी,
कहां गए कृष्ण सुखदायी जो वेद धर्म अनुयायी।
गए नारद ब्रह्मा कहां करू क्या बयां रहे नहीं यही,
सब हमसे नाता तोड़ जाय परलोक बिराजे।

गजल (१५७)

रंज क्या क्या न सहे धर्म से गाफिल होकर,
पाप क्या क्या न किए बिषयों में मायल होकर।
राज धन सम्पदा और दौलतो उम्मीद नफा,
हाय क्या क्या न गया हात से हासिल होकर।
अवलथी इल्म था और फन हुनर सब कुछ था,
हाय गजब कैसे बने लायको काबिल लेकर।
पहले अफजल के कर्म जन्म की परवाह न थी,
अब जलालत में गिरे जन्म से अफजल होकर।
मानलो मानलो इज्जत जो पुरानी चाहो,
अब भी आर्य बनो सत धर्म में शामिल होकर।

प्रभाती (१५८)

तजि तजि धर्म मित्र एते दुःख पाए,
जब लगे धर्म से ज्वलित अग्नि है बनाए।
हाथी और सिंह नाहर सन्मुख नहीं आए।
दाहशक्ति त्यागी जदि रवेह नाम पाए,

तनिक सी चींटी भी रौंदि शीश जाए।
ब्राह्मण निज धर्मपाल ऋषि मुनि कहलाए,
महाराज रावन ने सादर शिर नाए।
पदवी जो मिलत आज कहत लाज आए,
पीर और बबर्ची खर भिश्ती बतलाए।
क्षात्र धर्म जब थे क्षत्रिय मन भाए,
आवत समरांगन में कालहु भय खाए।
धर्म विमुख है के अब दर दर मुंह बाए,
सिंह नाम पाय स्यार सन्मुख घबराए।

गजल (१५६)

वेदो का पढ़ना छोड़ दिया हाय गजब सितम गजब,
पंच यज्ञ करना छोड़ दिया······
पढ़ते थे जब हम वेदों को, जानते थे सब भेदों को,
वेदी से मुख मोड़ लिया, हाय गजब सितम गजब।
कृष्ण से योगी भारी थे, अर्जुन से शस्त्र खिलारी थे,
रामचन्द्र से आज्ञाकारी थे, हाय गजब······
बुजुर्ग हमारे लासानी थे, दुनियां में वह तो नामी थे,
जान वह अज्ञानी थे, हाय गजब······
पहले ब्रह्मचर्य कमाते थे, गृहस्थ में फिर आते थे,
फिर बान प्रस्थ पद पाते थे। हाय गजब······
सन्यासी पद फिर पाते थे लोगों को सत्य बताते थे,
ईश्वर भक्ति सिखाते थे। हाय गजब······

भजन (१६०)

वेदों का पढ़ना छोड़ दिया हाय गजब सितम गजब।
शूरबीर रण पै चढ़ते थे, नहीं शत्रुओं से वह डरते थे,
अधर्म पूर्वक नहीं लड़ते थे। हाय गजब······

वह पांच यज्ञ करते थे, और वेदों को ही पढ़ते थे,
ईश्वर से वह सब डरते थे। हाय गजब······
भारत में तबाही का युग था, भाई से सगा भाई था
अविद्या अब हर सू छाई है। हाय गजब······
ऋषि दयानन्द ने आन जगाए, गुरुदत्त ने प्राण बचाए,
लेखराम ने प्राण गंवाए। हाय गजब······
वेदों को पढ़ो पढ़ाओ अब, ईश्वर की महमा गावो सब,
आर्य कहे जाओगे कब। हाय गजब······

दादरा (१६०)

मेरा वैदिक फुलवरिया को मन तरसे।
अंगों की सड़कें उप अंगों की रौसें, उपनिषदों की क्यारी,
गुल बरसे। मेरा······
कर्म उपासना ज्ञान ध्यान जहां, वहां जाने को विनती करूं हरि से।
यज्ञ हवन से हो पवन सुगंधित, सीचें जइयो भक्ति जल से।
पुराणों ने कांटों की बाढ़े लगाई, मैं जाने न पाया उन्हीं के डर से॥

गजल (१६१)

आजकल वैदिक धर्म झूटा फसाना हो गया,
जिससे झूटे पोप जी का पूरा खजाना हो गया।
पाप करते आप और कलियुग के जिम्मे रखे,
हाय मेरे भाइओ बिल्कुल दिवाना हो गया।
ऐसी पुस्तक से कहीं इन्सां की होती है निजात,
जो ये कहते है कि वह ईश्वर जनाना हो गया॥३॥
उस दयामय ईश पर झूटी कथाऐं जोड़कर,
वेद मारग छोड़ कर पापी जमाना हो गया॥४॥

अब अगर भाइयो न समझें यह हमारा है कसूर,
सत्य का उपदेश कर स्वामी रवाना हो गया ॥५॥

भजन (१६२)

टेक—वेद पठन क्यों छोड़ दिया तूने।
हिंसा न छोड़ी चोरी न छोड़ी,
हवन करन क्यों छोड़ा दिया तूने ॥१॥
मोह न छोड़ा मान न छोड़ा,
इन्द्रिय दमन क्यों छोड़ दिया तूने ॥२॥
ठगी न छोड़ी, धोखा न छोड़ा,
शास्त्र मनन क्यों छोड़ दिया तूने ॥३॥
धन के गर्व में फिरे दिवाना,
शुद्ध करम क्यों छोड़ दिया तूने ॥४॥
भाई मिथ्या तजी न वासना,
ईश भजन क्यों छोड़ दिया तूने ॥५॥

गजल (१६३)

कहां गया वह बता दो भाइयो वह पहला जाहो जलाल तेरा,
कहां गई तेरी शानो शौकत, किधर गया वह कमाल तेरा।
कहां गई तेरी वेद विद्या, वो ईश्वरी ज्ञान का खजाना,
अजल में ईश्वर ने था तो सौपा किधर गया है वो माल तेरा।
कहां वह प्रतिमा कहां वो बल है, कहां वो पूरी चमक दमक है,
कि जिससे मानिन्दे महरे अनवर चमक रहा था जलाल तेरा।
कहां गया तेरा सत्य भाषण सुकर्म एवं सुधर्म धारण,
गया कहां पर वह प्रेम पुरखा कि था जो अनमोल लाल तेरा।
दुबारा लेकर जन्म जो आवें कणाद गौतम व व्यास आदि,
यकीं है सर को पकड़ के रोवे जो देंगे ऐसा जलाल तेरा।

भजन (१६४)

दोहा—विद्या की हानि भई, छाई अविद्या आप।
फूट पड़ी कौतुक भए, भाइन करत विलाप ।।

टेक—महाभारत दुखदाई ने, हमें सबको गर्द मिला दिया।
पहले हम सब महाराज थे, शोभा युक्त ताजों के ताज थे।
दुनियां के काजों का काज थे, अब मोह ताज बना दिया ।।
दुर्योधन अन्यायी ने ।।१।। महाभारत……

आपस में लड़ लड़कर मर गए, विद्यावान जगत से टर गए,
वेद के पाठी विप्र किधर गए, वैदिक धर्म गंवा दिया,
अपनी मूर्खताई ने ।।२।। महाभारत……

फूट पड़ी आपस की दह गई, सुख सम्पति प्रभुता सब बह गई
डेढ़ हाथ की लकड़ी रह गई, शास्त्रों को बिसरा दिया,
आपस की लड़ाई ने ।।३।।

लख संहारी बाण कहां गए, गगन मंडल विमान कहां गए,
बल पौरुष गुण ज्ञान कहां गए सारा तेज घटा दिया,
'भाई को मारा भाई ने ।।४।।

कोई हिन्दू कोई मुसलमान भए कोई जैनी कोई क्रिश्चियन भए,
कोई बौद्ध कोई नवीन भए ऐसा विघ्न मचा दिया,
पोपों की ठगियाई ने ।।५।।

एक धर्म का पता न पावे, आपस में कोई मता न पावे,
अज्ञान वश कोई राह न पावे, सबका होश उड़ा दिया,
समझ न की कच्चाई ने ।।६।।

भजन (१६५)

अविद्या पापिन नैं जगत में जुल्म गुजारा।
खुदगर्जी ने खुदगर्जी से अपना धर्म बिगाड़ा ।।१।।

अनेक मत हो गए जगत में द्वेष भाव फैलाना,
वैर विरोध बढ़ा आपस में रच दिए ग्रंथ हजारा ॥२॥
शोक बड़ा भारी है हमको, स्त्रियों ने क्या माना,
कब्र ताजिए फिरैं पूजती, पतिव्रत धर्म बिगाड़ा ॥३॥
पहले मिलकर प्रेम बढ़ाते प्रेम भाव फैलाते,
बात बात पर अब लड़ते हैं हाय शोक है भारी ॥४॥
ऐसी दशा में ऋषि दयानन्द, आगए सूर्य समाना,
धन्य धन्य है स्वामी जी को, बराबर गुण गाना ॥५॥

दादरा (१६६)

आज हम पै छाय रही काली घटा,
बादल अविद्या के चढ़ आए, वेदों के सूरज को दीना हटा ॥१॥
दान पुण्य में देते न कौड़ी, पापों में रुपिए रहे लगा ॥२॥
अच्छे कामों में ढिग नहीं आवें, बुरे कामों के चकले में जाता डटा ॥३॥
अन्तिम विनय है तुमसे मेरा, वेदों को पकड़ो प्यारो पटा ॥४॥

भजन (१६७)

यह वही ऋषि सन्तान है, वेदों का जिसे घमण्ड था।
भूमण्डल में जिसकी कहानी सुनी जाय इतिहास जुबानी,
अब कैसी हो गई है हानि जिनका नहीं निदान है ॥१॥
सब यहां के शागिर्द कहाए भारत में विद्या पाए,
जो सुख है सब भारत से पाए, गई कहां वह कान है ॥२॥
प्रभु तेरी है अद्भुत माया, वही देश हिन्दू कहलाया,
किया पाप सब आगे आया, नहीं किसी पर दान है ॥३॥
वेद छोड़ रच लई कहानी, तलफ रही लाखों जिंदगानी,
जिन्दा फूंक सती कर मारी, इससे बड़ी का हान है ॥४॥

भाई बहन अब मत पछताना, आया है अब वही जमाना,
प्रेमी कहे सब सुनियो दाना, जड़ गुरुकुल का स्थान है ॥५॥

भजन (१६८)

देखो रे भाइयों बिगड़ा है सारा जमाना ।
महाभारत के घोर युद्ध से हो गया अपना बिगाना ।
आर्यावर्त था देश हमारा, सब देशों में था यह दाना,
हिन्दू वहशी काला का फिर हाय उसे अब माना ।
जगत गुरु ब्राह्मण होते थे, जाने है सारा जमाना,
पीर बबर्ची मिश्ती खर की, पदवी उन्हें दिलाना ।
सिंह समान गरजता था वह कभी राजपूताना,
आज नाम पर सिंह लगाकर क्षत्रिय वीर कहाना ।
प्राणी मात्र की रक्षा करना जग से पाप हटाना,
आज उन्होंने धर्म समझ लिया मद्य मांस का खाना ।
उदय भाग्य हो गए सभी के हुवा ऋषि का आना,
जय जय राम धन्य स्वामी को बार-बार गुण गाना ।

गजल (१६९)

अब हम सबों की पहली सी हालत नहीं रही,
इसकी वह शान और शोकत नहीं रही ।
गौतम कपिल व्यास और पांतजति कणाद,
उनकी सी अब किसी में लियाकत नहीं रही ।
बद ऐतकादियों के सबब सब बन गए गुलाम,
वैदिक धर्म की हाय कहीं अपनी हुकुमत नहीं रहीं ।
घर घर में जल रही है निफाको हसद की आग,
आपस में मेल जोल प्यार मुहब्बत नहीं रही ।
दुनिया के मोहजाल में ऐसे फंसे है मूढ़,
शुभ कार्यो के करने की कोई रगबत नहीं रही ।

नाच नाच कर रात गुजार दें,
पर सभा सत्संग में आने की फुरसत नहीं रही।
उलफत धर्म की छोड़ के विषयों में सब फंस गए,
परमात्मा के न्याय धर्म की किसी को दहशत नहीं रही।
जो काम तुमको करना है प्यारे भाई ! जल्द करो,
इस जग में ज्यादा रहने की किसी को मोहलत नहीं रही।

दादरा (१७०)

कैसी हो गई है हालत तुम्हारी रे।
हम सब सभी शिरोमणि थे आज कैसी हो गई ख्वारीरे,
वेदों का कभी डंका बजता था अब मिथ्या विचार हुए जारी रे।
ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य उच्चकुल, आर्यो से हो गए अनारी रे॥
भीष्म पितामह के वंशज अब होते जाते व्यभिचारी रे,
ब्रह्मचर्य धर वेद पढ़े थे अब मिथ्या विचार हुए जारी रे।
उपदेष्टा कभी संयासी थे अब पकड़े रंगे भिखारी रे,
कभी यहा वेद ध्वनि होती थी, अब मिथ्या नाच रंग जारी रे॥

गजल (१७१)

कभी हम जहां में थे आली जाह, तुम्हें याद ही कि न याद हो,
सभी देश पाते पनाह थे तुम्हें याद हो कि न याद हो।
कभी थे पंतजलि नामवर जो योग शास्त्र बनायकर,
किया राहे हक से हमें आगाह, तुम्हें याद हो कि न याद हो।
यहां राम थे दशरथ के सुत, जिन्होंने मारीच व ताड़का,
नई उम्र में थे किए तबाह तुम्हे याद हो किन याद हो।
यहां पाणिनी जैसे ऋषि जिन्होंने रची अष्टाध्यायी थी,
कहां उनके ज्ञान की थाह थी तुम्हे याद हो कि न याद हो।

गौतम से थे जो फिलासफर, न्याय शास्त्र जिनकी रचना थी,
मन्तक को जग में फैला दिया तुम्हें याद हो किन याद हो।

गजल (१७२)

सबसे ऊंचे हम थे कभी तुम्हे याद हो किन याद हो,
सारे जहां में पूज्य थे तुम्हे याद हो किन याद हो।
यहां वेद ज्ञान भण्डार था, उपनिषदों का भी खजाना था,
देखा कि कितना महान था तुम्हें याद हो कि न याद हो।
अब आंख खोल लो बरमला नहीं वक्त है अब सोने को,
यह किसी का सत्य उपदेश है तुम्हें याद हो कि न याद हो।
गया समय फिर आता नहीं सदा ऐश दिखलाता नहीं,
कई काल युग के गुजर गए तुम्हे याद हो कि न याद हो।
जय जय राम सदा समझाता है, सब बुराइओ से बचाता है,
उठो जागो सूरज चढ़ा हुआ तुम्हे याद हो कि न याद हो।

दादरा वैदिक विवाह (१७३)

देखो रे भाइयो ! ऐसे ब्याह रचाना।
वर कन्या हो जवान दोनों सुन्दर जोड़ी मिलाना ॥१॥
वर खुद मन्त्र पढ़ने वाला, ऐसी ही विदुषी कन्या हो,
अब युग बदलो समझ सोचकर गुण और कर्म स्वभाव,
विधिवत् तुम ठीक से मिलाना ॥२॥
चाहिए मंडप को सजवाना, बड़े-बडे पंडित बुलवाना,
उत्तम उत्तम यज्ञ रचाना और सुन्दर हो व्याख्यान,
ऐसे विवाह वैदिक कराना ॥३॥
बड़े बडे बैनों को बुलवाना, अपनी बाग बहार लुटाना,
मतलब समझ नहीं शर्माना कैसी भूल तुम्हारी है,
भाईयो धन को व्यर्थ गंवाना ॥४॥

गजल (१७४)

हुआ यह जो वैदिक विवाह हरेक घर हो तो ऐसा हो।
सुनी ध्वनि ओ३म् स्वाहा की सुभगवर हो तो ऐसा हो।
उमर में हैं युवा दोनों गुणों में भी बराबर हैं।
जो कन्या हो तो ऐसी हो अगर वर हो तो ऐसा हो।
बुलाया इष्ट मित्रों को दिखाया ब्याह सतयुग का।
जमा किए देवता देवी समधि गर हो तो ऐसा हो।
सजाया बेल बूटों से सजाया खूब ही मंडप।
किया वेदोक्त सब कुछ ही धर्म पर हो तो ऐसा हो॥
बुला पण्डित ये विद्वद्वर सुनाए धर्म के लैक्चर।
रचाया यज्ञ अति सुन्दर सुखद गर हो तो ऐसा हो॥
उठो भाइयो संभल बैठो अब वैदिक वायु बहता है।
नहीं रोके रूकेगा अब समा गर हो तो ऐसा हो॥

गजल (१७५)

वचन दो सात जब हमको तभी प्रीतम कहाओगे।
किया इकरार पंचों में उसे पूरा निबाहोगे॥
पकड़ कर हाथ जो मेरा मुझे पत्नी बनाया है।
तो नैय्या उम्र भर मेरी किनारे से लगाओगे॥
हमारे वस्त्र भोजन की फिक्र करना तुम्हें होगा।
वचन मन कर्म से प्यारे मुझे अपना बनाओगे॥
विपत सम्पत्ति बीमारी गमी शादी व सुख दुख से।
कभी किसी हाल में मुझसे जुदा होने न पाओगे॥
जवानी और बुढ़ापे में खिजां बहार यौवन में।
निगाहें प्यार की हरदम खुशी हमको दिखाओगे॥

गजल (१७६)

वचन दो सात जब हमको तभी प्रीतम कहावेंगे।
तिजारत नौकरी खेती अर्थ और धर्म सम्बन्धी॥

करो कोई काम जब जारी हमें पहले जताओगे।
जो बिगड़े काम कुछ मुझसे, करो एकान्त में शिक्षा ॥
मगर ननदी सहेलिन में न तुम हमसे रिसाओगे।
हमें तज और नारी को दिया कभी दिल तो तुम जानो ॥
किए अपने को पाओगे जो मेरा जी जलाओगे
अग्नि की साक्षी देकर जो अर्धांगिनी किया मुझको,
तो फिर तुम अपने बांए पर मुझे लाकर बिठाओगे ॥

गजल (१७७

बचन देता हूँ मैं तुमको तुझे पत्नी बनाऊंगा।
मगर मैं चन्द बातों का अहद तुमसे कराऊंगा।
तुझे मैं धर्म की खातिर जो अर्धांगिनी बनाता हूँ।
तो सारी उम्र अपने से न पग पीछे हटाऊंगा।
मगर तालीम हुक्मों पर मेरे रहना कमर बस्ता।
हुई इस काम में गलती तो फिर शिक्षा दिलाऊंगा।
सिवा मेरे जो कोई नर हो चाहे कितना ही सुन्दर।
जो की गर ख्वाब में ख्वाहिश तो दिल तुम से हटाऊंगा।
ग्रहाश्रम के लिए तुमको किया साथी व सहधर्मिन।
कठिन इस धर्म आश्रम को तेरे बिन कर न पाऊंगा।
विपत्ति सम्पत्ति में हरदम हमारे साथ में रहना,
गुजारा उसमें ही करना कि जो कुछ मैं कमाऊंगा।
दगा राखो जो कुछ दिल में तो अपने दिल की तुम जानो,
मगर मैं धर्म से अपना, वचन पूरा निबाहूँगा।

कव्वाली (१७८)

तुम से वचन भरा के पत्नी बनाऊंगा मैं,
जो जो करूं प्रतिज्ञा पूरी निभाऊंगा मैं ।

पहली तो बात यह है सुनलो ए प्राण प्यारी,
गर हो पढ़ी तो अच्छा वर्ना पढ़ाऊंगा मैं।

जब जब मिलो किसी से से तब तब झुका के सिर को,
कर जोड़ कर नमस्ते तुमसे कराऊंगा में।

ईश्वर बिना किसी की पूजा न करने दूंगा,
मीरा मशान बकरे पूजन छुड़ाऊंगा में।

तक लीफ मैं तुम्हारी वेशक रहूँगा साथी,
लेकिन बुला के स्याने हर्गिज न लाऊंगा मैं।

संध्या हवन व पितृ बलि वैश्य देव अतिथि,
नित पंच यज्ञ करना तुमको सिखाऊंगा मैं।

गजल (१७९)

कम उम्र के व्याह ने मिट्टी में मुल्क मिला दिया,
बुद्धि बल वीर्य इसी कम्बख्त ने भुगता दिया।

देश का दुश्मन जो काशीनाथ एक ऐसा हुवा,
शीघ्र बोध बना के जिसने शीघ्र नाश करा दिया।

मनुस्मृति और वेद से होकर मुखालिफ मूर्ख ने,
अष्ट वर्षा भवेत गौरी कहके सबको डुबा दिया।

चल बसी कुव्वत दिमागी मिस्ल है वो हो गए,
फिर वह कर सकते हैं क्या निज अकल को ही गंवा दिया।

मर गए थोड़ी उमर में घर में बेवा रो रही,
जय राम इनकी आह ने वीरान सब कुछ कर दिया।

स्त्री शिक्षा

गजल (१८०)

कौशल्या माता भई जग में परम अनूप,
तासु पुत्र श्रीराम जी भये आर्य कुल भूप।
सीता सुमति सुशीलता सब जग में विख्यात,
जिहि चरित्र उपमा लिखित कबिजन मन सकुचात।

देव धृती विद्याधरी, अनुसूइया गुण गेह,
पतिव्रत धर्म सिखावती, विद्या सहित सनेह।

नाम गार्गी जग विदित अतिरिक्त संसार,
ब्रह्मचारिणी परमदृढ़ विद्या सिंधु अपार।

सभा बीच गर्जत रही वेद शास्त्र मुख द्वार,
मानी पण्डित जय किए रहे सभी मन मार।

ज्ञानवती मन्दालसा परमशील सन्तोष,
विद्या बुद्धि सुसभ्यता धर्म धैर्य धनकोष।

भजन (१८१)

सुख नहीं मिलता यार, मूर्ख सारि से हर्गिज,
मुंशी मास्टर और पण्डित, घर में हो जाते सब खंडित,
जब होने लगे तकरार···

अंग्रेजी अर्बी वाले, सब किलकिल करें कराते,
जब मिलती है मूर्खा नार···

बाहर चलती है पण्डिताई, घर में आ सब रिल हो जाई,
जब पत्नी दे ललकार···

वे सारे ही दुख उठाते, बुरा नारी का पढ़ना बताते,
दई कहां बुद्धि बिसार···

इस दुख से जो बचना चाहो, कन्याओं को जरूर पढ़ाओ,
करो विद्या विस्तार···

भजन (१८२)

बहनो ! यह तुम धार लो मन चाहा फल पावोगी,
बाली उमर में विद्या पढ़ना, घर में नहीं किसी से लड़ना,
यथा योग्य प्रिय भाषण करना, कड़वे बचन संभार लो,
सब दुख से छुट जाओगी।

धर्म कमाई से धन जोड़ो, बुरे कर्म से मुखड़ा मोड़ो,
फिजुल खर्ची करना छोड़ो, घर का खर्च विचार लो।
नहीं मूर्खा कहलाओगी ।।

सेवा करना सास ससुर का मात पिता पति देवर का,
यह आज्ञा है परमेश्वर का बिगड़ी दशा सुधार लो।
पतिव्रता कहलाओगी ।।

धीरजता धारो हे नारी, ज्यो द्रोपदी सीता ने धारी,
बुद्धिमान कहे सुनो हमारी, संस्कृति नाव उबार लो।
जग में यश फैलाओगी ।।

होली (१८३)

क्यों बनी हो गंवारी, पढ़ी नहीं विद्या भारी,
बिन विद्या के पावे न आदर पुरुष हो या नारी।
सुनो तुम चातुर नारी ।।

सुख सम्पति जो चाहो जगत में रहो पति की आज्ञाकारी,
सास ससुर और बड़े जनों का उनकी सेवा करो भारी।
मानो यह सीख हमारी ॥

पति आज्ञा जो करे हैं उल्लंघन, वो नारी नहीं हैं अनारी,
मूर्खों की संगति जो बैठे हैं वह जीवन भी बिगारी।
हो कितनी ही रूप संवारी ॥

पहली नारी देखों दुलारी, कैसी थी ये सीता नारी,
अब तक पूजी जाय जगत में छोड़ा महल अटारी।
चली बन जनक दुलारी ॥

ऋषियों का यह वचन हितैषी की जो सोच विचारी,
प्राण जाय पर धर्म न छोड़ो दुख हो कितना भारी।
मरो चाहे खाय कटारी ॥

गजल (१८४)

सोचना बहनो कि पहले कैसी नारी तुममें थीं।
सीता कुन्ती गार्गी कृष्णकुमारी कुमारी तुममें थीं ॥

पद्मिनी विद्योत्तमा मन्दालसा मन्दोदरी।
ज्ञान गुण की खान थीं वह सत धर्म धारी तुममें थी ॥

छोड़ के पति सेवा तुम यह बेखबर क्यों हो रही।
धर्म में वह ध्यान दो पहले जो जारी तुममें थीं ॥

है सदा ईश्वर से बहनों अब यह मेरी आरजू।
फिर से हों जैसी यहां पर नाम धारी तुममे थीं ॥

दादरा (१८५)

बहनो सुनना दया करके मेरी कथन ।
जैसी थी सीता पतिव्रता नारी ऐसा बना लो अपना चलन ॥
महलों का रहना त्यागकर पति संग जा कष्ट भोगा था बन ।
छोड़ रेशमी वस्त्र जोड़े वृक्षों के पत्तों का पहनना ओटन ॥
बहुत तरह निज कष्ट भोगे पर छोड़ा नहीं पति पूजन ।
माता सीता ने अशोक बन में लगा के रखी सच्ची लगन ॥
तुम भी पति की आज्ञा मानो सीता जैसा बनाओ चलन ।
खोटे गाने विवाहों के छोड़ो, गाओ प्रभु के सुहाने भजन ॥

भजन (१८६)

ए रावण तू धमकी दिखाता किसे मुझे मरने का खौफो खतर ही नहीं,
मुझे मारेगा क्या अपनी खैर मना तुझे होनी की अपनी खबर ही नहीं ।
तू जो सोने की लंका का मान करे मेरे आगे ये मिट्टी का घर भी नहीं,
मेरे दिल का समेरु डिगेगा कहां मेरे मन में किसी का भी डर ही नहीं ।
आवे इन्द्र नरेन्द्र जो मिलके सभी क्या मजाल जो शील को मेरे हरें
तेरी हस्ती है क्या मेरे राम पिया मेरी नजरों में कोई बशर ही नहीं ।
तूने सहस्रअठारह जो रानी बरी तुझे इतने पै आया सबर ही नहीं,
पर त्रिया पर जो तूने ध्यान दिया क्या नर्क का तुझको खतर ही नहीं ।
मेरी चाह जो थी मेरे दिल में बसी, क्यों न जीत स्वयंवर तू लाया मुझे,
वह कौन जगह मुझे दे तू बता जहां स्वयंवर की पहुँची खबर ही नहीं ।
जो हुआ सो हुआ अब भी मान कहा मुझे राम पै जल्दी दे तू पटा,
वर्ना सीता कहे तू देखेगा क्या चन्द रोज में अब तेरा सर ही नहीं ।

दादरा (१८७)

दोहा—अब तो जागो नींद से प्रिय भगिनी और माय,
भारी गफलत नींद से संस्कृति उजड़ी जाय।

टेक— बहनो करना विचार, कैसी दशा है तुम्हारी,
माता भी प्यारी भैया भी प्यारे भाभी को देती हो ताने हजार।
अड़ौसिन भी प्यारी पड़ौसिन भी प्यारी, दुश्मन है सासु का कुल परिवार,
लड़ती तो सास ननद से तुम हो गुस्सा उतारो दो बच्चों को मार।
जाने पहचानों से घूंघट करत हो मेलों में जाती हो मुंह को उघार,
ईश्वर की भक्ति न संध्या को करती पूजा हो जाजा के जाहिर मजार।

दादरा (१८८)

पहनो पहनो सुहागिन ज्ञान गजरा
दया धर्म की ओढ़ो चुनरिया शील का नेत्रों में डारो कजरा,
लाज करो तुम पर पुरुषों से अपने पति का देखो मुखरा।
सास ससुर की सेवा कीजो अपने पति से न करो झगरा,
विना विद्या के ए मेरी बहनो सहती हो तुम अति दुखरा।
स्वामी जी आए सबको जगाए, समझ गए वो शान्ति पाए,
तुम भी सुधरो ए मेरी बहनो काहे को करती फिरो रगरा।

दादरा (१८९)

मेरी भोली सी बहनों इधर कान करो री,
वेदों का सूरज यह कितना चढ़ा है जिसने जगत को प्रकाशित किया है,
मत सुन्दर समय को वीरान करो री।
लाखों बहनों का मिटा है अंधेरा, तुमको क्यों आलस निद्रा ने घेरा,
उठो विद्या के अमृत का पान करो री।

तैमूर नादिर का जमाना नहीं है, जानो हो सब कुछ बताना नहीं है,
बस सच्ची तरक्की का ध्यान धरो री।
साहस व हिम्मत से आगे बढ़कर वेदों की विद्याएं जग में फैलाओ,
कहे जयराम शुभ कर्मों में दान करो री।

भजन (१९०)

जो चाहो सुख मेरी बहनों तो तुम यह गुण धार लो।
पतिव्रत धर्म का पालन करके, शुभ जीवन का सार लो।।
घर में कलह लड़ाई झगड़े रूठ मनाना त्याग कर।
चतुराई और हुशियारी से घर के काम संवार लो।
आप पढ़ो सन्तान पढ़ाओ, मूरखता को छोड़ दो।
बिना पढ़े कुछ अक्ल न आवे मन में खूब विचार लो।।
कब्र ताजिए पीर सीतला, को मत पूजो भूलकर।
अपने पति और परमेश्वर को पूज के जन्म सुधार लो।।
पतिव्रता नारी की जग में होवे यश और कीर्ति।
सीता सावित्री दमयन्ती की तुम ओर निहार लो।

गुरुकुल महिमा

कव्वाली (१९१)

वैदिक धर्म की शिक्षा गुरुकुल से लाभ होगी
ब्रह्मचर्य आश्रम जो बुनियाद आश्रमों की।
इसके बिना तुम्हारी आयु खराब होगी।।

तालीम आजकल जो हम सब में हो रही है।
वह एक दिन सभी के सिर पर अजाब होगी ॥

ईसूमसी व मरयम स्कूलों में याद आवे।
ऋषियों की वह कहानी तुम सबको ख्वाब होगी ॥

वेदों को छोड़ देंगे बच्चों के गीत कहकर।
जब हाथ में तुम्हारे बाइबिल किताब होगी ॥

दिन वो तिथि को भूलें सम्वत् न याद होंगे।
तारीख ईसवी, पर गिनना हिसाब होगी ॥

हिन्दी पढ़ाओ सबको गर चाहते भलाई।
श्री राम कृष्ण जी की घर घर में मांग होगी ॥